मासिक पत्रिका RAJHIN/2007/21229 वर्ष–01, अंक नं. 06

जयपुर टाइम्स

राजस्थान की रग–रग से निकली बात जयपुर टाइम्स मैग्जीन के साथ

MP-RAJASTHAN COUGH SYRUP DEATHS !

वर्ष: 01, अंक 06 | अक्टूबर, 2025

इस अंक में

प्रवासी राजस्थानियों से दिल के तार 04

प्रवासी राजस्थानियों से दिल के तार जोड़ रहे भजनलाल शर्मा

डॉ. सतीश पूनियां की पुस्तक 07

डॉ. सतीश पूनियां की पुस्तक 'अग्निपथ नहीं जनपथ' का विमोचन

पिछली सरकार में बदनाम हुए विभाग... 10

पिछली सरकार में बदनाम हुए विभाग को आबाद कर रहे कन्हैया लाल चौधरी

विधायक एवं कैबिनेट मंत्री जोराराम 18

विधायक एवं कैबिनेट मंत्री जोराराम कुमावत चहुंमुखी विकास की ओर अग्रसित

दिनेश एम.एन. जिनके नाम...... 21

दिनेश एम.एन. जिनके नाम से ही दुबक जाते हैं गैंगस्टर और डकैत

मानवीय मूल्य और मॉडर्न एजुकेशन... 27

मानवीय मूल्य और मॉडर्न एजुकेशन का अद्भुत संगम है संगीता भवाल

दौसा में विधायक की तरह सक्रिय 32

दौसा में विधायक की तरह सक्रिय हैं जगमोहन

चाकसू का विकास, बैरवा के संग 35

बुलेट ट्रेन की रफ्तार से दौड़ रहा चाकसू का विकास

प्रकाशक, मुद्रक
रामेश्वर लाल जाट

संपादक
नीतू चौधरी

उप संपादक
कुमकुम रंगा, रूपचंद गुर्जर, रोहित शर्मा

ग्राफिक डिजाईनर
रजत जाखड़

स्वत्वाधिकारी

केम्ब्रिज मल्टी मीडिया के लिए प्रकाशक, मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा केम्ब्रिज मल्टी मीडिया प्रा.लि. सी-565, सी-4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड, सीकर रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं सी-565, सी-4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड़, सीकर रोड़ जयपुर से प्रकाशित

संपर्क
संपादक
जयपुर टाइम्स (मासिक)
सी-588, सी-4सी स्कीम,
न्यू लोहा मण्डी रोड
जयपुर-302013

E-mail
jaipurtimes2007@gmail.com

website
www.jaipurtimes.org

मो. 7014217770

मूल्यः- 100/- प्रति अंक
वार्षिक सदस्यता- 1251 (पोस्टल चार्ज सहित)

सुधी पाठकों के लिए जयपुर टाइम्स का विशेष संदेश

राजस्थान में बस हादसे, RTO की मिलीभगत और जिम्मेदारी का सवाल

बस हादसों का सचः जब भ्रष्टाचार आमजन की जान पर भारी पड़ने लगे

राजस्थान में पिछले कुछ दिनों में हुई बस दुर्घटनाओं ने पूरे राज्य को झकझोर दिया है। इन घटनाओं में जहां कई निर्दोष यात्रियों की जान गई, वहीं जांच में ऐसे चौंकाने वाले तथ्य सामने आए हैं जो न केवल व्यवस्था की नाकामी बल्कि भ्रष्टाचार की गहरी जड़ों की ओर भी इशारा करते हैं। सबसे गंभीर बात यह है कि इन दुर्घटनाओं में जिन बसों का नाम आया, वे सभी RTO (क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय) से विधिवत परमिट प्राप्त थीं- जबकि उनकी बॉडी, संरचना और सुरक्षा मानक साफ़ तौर पर नियमों के खिलाफ थे। इससे यह सवाल उठता है- आखिर ऐसी बसों को सड़क पर दौड़ने की अनुमति कैसे मिल गई? और अगर यह अनुमति मिली भी, तो किसकी मिलीभगत से?

RTO की मिलीभगतः भ्रष्टाचार की परतें खुलीं

जांच रिपोर्टों में स्पष्ट रूप से सामने आया है कि कई बसें जो हादसों का शिकार हुईं, वे तकनीकी रूप से सड़क पर चलने योग्य ही नहीं थीं, न ही बॉडी स्ट्रक्चर सुरक्षा नियमों पर खरा उतरता था। फिर भी, इन बसों को परमिट मिल गया, फिटनेस प्रमाण पत्र जारी हो गया, और वे महीनों से यात्रियों को लेकर सड़क पर दौड़ रही थीं। यह तब संभव होता है जब RTO अधिकारी और बस संचालक के बीच मिलीभगत हो। फिटनेस जांच के नाम पर कागज़ी खानापूर्ति कर ली जाती है, और मोटी रकम लेकर अधिकारी फर्जी रिपोर्ट तैयार कर देते हैं। कई मामलों में बसें कार्यशालाओं से बिना जांच लौट आईं, लेकिन दस्तावेज़ों में उन्हें 'पूर्ण रूप से फिट' घोषित कर दिया गया। यही लापरवाही बाद में जानलेवा हादसों का कारण बनती है।

जनता की जान बन गई भ्रष्टाचार की कीमत

हर साल सैकड़ों लोग सड़क दुर्घटनाओं में अपनी जान गंवाते हैं, जिनमें सबसे बड़ी हिस्सेदारी असुरक्षित बसों और निजी परिवहन वाहनों की होती है। इन बसों के मालिक अक्सर आर्थिक लाभ के लिए नियमों की धज्जियां उड़ाते हैं- ओवरलोडिंग, बिना सर्विस के वाहन चलाना, या फिर मानक से अधिक सीटें जोड़ना आम बात है। लेकिन असली अपराध तब होता है जब इस अवैधता पर सरकारी तंत्र मुहर लगा देता है। जनता भरोसे में यह मान लेती है कि यदि बस को सरकार ने परमिट दिया है, तो वह सुरक्षित होगी। लेकिन जब RTO स्वयं भ्रष्टाचार में डूब जाए, तो यह भरोसा टूट जाता है। यह केवल प्रशासनिक असफलता नहीं, बल्कि नैतिक पतन का संकेत है- जहां अधिकारी पैसे के लिए जनता की सुरक्षा तक को दांव पर लगा देते हैं।

सरकार की जिम्मेदारीः गहन और निष्पक्ष जांच जरूरी

राज्य सरकार ने इन हादसों के बाद जांच के आदेश तो दे दिए हैं, लेकिन सवाल यह है कि क्या यह जांच वास्तव में गहराई तक जाएगी? क्योंकि यह केवल किसी चालक या बस मालिक की गलती नहीं, बल्कि पूरे सिस्टम की मिलीभगत का मामला है। सरकार को चाहिए कि वह RTO विभाग में एक व्यापक और स्वतंत्र जांच अभियान चलाए। केवल निचले स्तर के कर्मचारियों पर कार्रवाई करके इस मामले को बंद कर देना पर्याप्त नहीं होगा। फिटनेस प्रमाणपत्र देने वाले इंजीनियर से लेकर परमिट जारी करने वाले उच्च अधिकारियों तक सभी की भूमिका की समीक्षा होनी चाहिए।

साथ ही यह भी देखा जाना चाहिए कि- क्या इन बसों के पंजीकरण और फिटनेस प्रक्रिया में डिजिटल निगरानी थी? क्या किसी ने निरीक्षण रिपोर्ट को फर्जी बनाया? और क्या उच्च अधिकारियों को इन गड़बड़ियों की जानकारी थी, फिर भी उन्होंने आंख मूंद ली?

व्यवस्था में सुधार की दिशा में ठोस कदम आवश्यक

इन हादसों के बाद अब वक्त आ गया है कि राज्य सरकार केवल जांच तक सीमित न रहे, बल्कि प्रणालीगत सुधार की दिशा में ठोस कदम उठाए।

कुछ सुझाव इस प्रकार हैंः 1. डिजिटल फिटनेस जांचः हर बस का निरीक्षण वीडियो रिकॉर्डिंग के माध्यम से हो और उसे ऑनलाइन पोर्टल पर अपलोड किया जाए। इससे किसी अधिकारी को फर्जी रिपोर्ट बनाने की गुंजाइश नहीं बचेगी। **2. थर्ड पार्टी ऑडिट सिस्टमः** RTO की जगह स्वतंत्र टेक्निकल एजेंसियों को फिटनेस परीक्षण का अधिकार दिया जाए, जो सरकार से सीधे संबद्ध न हों। **3. रोटेशन नीतिः** एक ही अधिकारी लंबे समय तक एक क्षेत्र में पदस्थ न रहे। इससे स्थानीय स्तर पर बनने वाले भ्रष्ट गठजोड़ टूटेंगे। **4. जन निगरानी पोर्टलः** नागरिकों को शिकायत दर्ज कराने का सरल माध्यम मिले, जिससे कोई भी व्यक्ति संदिग्ध बस या अधिकारी की शिकायत ऑनलाइन कर सके। **5. बस बॉडी निर्माण पर सख्त नियंत्रणः** छोटे गैर-मानक बॉडी बिल्डर्स को लाइसेंस देने की प्रक्रिया की समीक्षा की जाए, और केवल मान्यता प्राप्त संस्थाओं को अनुमति दी जाए।

मीडिया और नागरिक समाज की भूमिका

ऐसे मामलों में मीडिया और नागरिक संगठनों की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है। यदि पत्रकार और सामाजिक कार्यकर्ता इन भ्रष्टाचार के मामलों को लगातार उजागर न करें, तो आमतौर पर ऐसे हादसे 'प्राकृतिक दुर्घटनाओं' के नाम पर भुला दिए जाते हैं। मीडिया को केवल घटना की रिपोर्टिंग तक सीमित न रहकर यह भी दिखाना चाहिए कि इसके पीछे की व्यवस्था कितनी सड़ी हुई है। जनता को भी अब यह समझना होगा कि सड़क सुरक्षा केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि उनकी भी है। यदि कोई बस ओवरलोड है, अधिक सीटें जोड़ी गई हैं, या उसकी हालत खराब है- तो यात्री को खुद विरोध करना चाहिए। चुप रहकर बैठ जाना, अपने ही जीवन को जोखिम में डालने के बराबर है।

-प्रधान संपादक
रामेश्वरलाल जाट

प्रवासी राजस्थानियों से दिल के तार जोड़ रहे भजनलाल शर्मा

अपनी साफ और ईमानदारी छवि से देश और दुनिया में बसे राजस्थानियों को खूब कर रहे हैं प्रभावित, प्रदेश में निवेश के लिए आतुर है प्रवासी राजस्थानी

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रदेश में पानी की विकट समस्या के समाधान के बाद अब अपना पूरा फोकस प्रदेश में एक शानदार और जानदार औद्योगिक माहौल तैयार करने में लगाया हुआ है, इसके लिए एक तरफ जहां राइजिंग राजस्थान में किए गए करीब 35 लाख करोड रुपए के समझौते में प्रत्येक समझौते को धरातल पर लाने के लिए श्रेष्ठ कार्य योजना तैयार करके अमली जामा पहनाया जा रहा है तो दूसरी तरफ देश और दुनिया में बसे प्रवासी राजस्थानियों को भी निवेश के लिए प्रेरित किया जा रहा है, जिसके लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने खुद मोर्चा संभाला हुआ है। शर्मा खुद राजस्थान के उन शहरों में दौरा कर रहे हैं बड़ी संख्या में राजस्थान के लोग व्यापार और विभिन्न क्षेत्रों में देश और दुनिया में जोरदार तरीके से स्थापित हो चुके हैं। ऐसे राजस्थानियों को राजस्थान में निवेश के लिए प्रेरित करने के लिए मुख्यमंत्री शर्मा खुद इन राजस्थानियों से मुलाकात कर रहे हैं और उन्हें राजस्थान सरकार की ओर से निवेशकों की सहायता और उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए जो नई योजनाएं और जो नए नवाचार किए गए हैं। उनकी जानकारी देकर उन्हें यह बताने का प्रयास कर रहे हैं कि राजस्थान इस समय पूरे देश में निवेश के लिए सबसे अच्छा स्थान है, जहां पर निवेश करने से एक तरफ उन्हें अच्छा प्रॉफिट होगा तो दूसरी तरफ राजस्थान के विकास में भी उनके योगदान को हमेशा याद रखा जाएगा। इसी परिपेक्ष में मुख्यमंत्री शर्मा ने अब तक सूरत, हैदराबाद और कोलकाता जैसे बड़े शहरों में जहां बड़ी संख्या में कामयाब प्रवासी राजस्थानी अपनी तरक्की से पूरी दुनिया में अपने नाम का लोहा मनवा रहे हैं, उनसे मुलाकात करके मुख्यमंत्री शर्मा उन्हें राजस्थान से जोड़ने का भरपूर प्रयास कर रहे हैं, जिसमें काफी हद तक मुख्यमंत्री शर्मा को सफलता भी मिली है।

देश और विदेश के निवेशक इस बार राजस्थान सरकार से बचकर नहीं जा सकेंगे

पिछले कई सालों से राजस्थान में देश और विदेश के उद्योगपतियों के सम्मेलन सरकारों की ओर से आयोजित करवाए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने भी अपने शासनकाल में इस तरह की आयोजन करवाए थे, अशोक गहलोत ने भी इस तरह के आयोजन करवाए थे, लेकिन यह आयोजन सिर्फ कागजी समझौते बनकर ही रह गए। इनमें से बहुत कम समझौते ही धरातल पर उतरे, अगर यह सारे समझौते धरातल पर उतर जाते तो आज राजस्थान विकसित राज्य की श्रेणी में सबसे पहले ही हो जाता लेकिन देश और विदेश के उद्योगपति इस तरह के सम्मेलन में उपस्थिति तो दर्ज करवाते और दिखावे के तौर पर कागजी समझौते भी कर लेते लेकिन बाद में जयपुर से जाने के बाद उन्हें भूल जाते लेकिन इस बार मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने अपने शासनकाल के पहले साल में ही इस तरह का सम्मेलन आयोजित करवाया ताकि सभी समझौते को धरातल पर आने के लिए सरकार के पास पूरे 4 साल रहेंगे और इन चार सालों में एक-एक समझौते को धरातल पर आने के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा खुद पूरे मामले की समय-समय पर मॉनिटरिंग कर रहे हैं। समझौते करने वाले प्रत्येक उद्योगपति से सरकार के मंत्री और अधिकारी नियमित रूप से बातचीत कर रहे हैं, उन्हें हर तरह से प्रेरित और सहयोग करने का आश्वासन दे रहे हैं। जिसके फलस्वरूप आपसे पहले ही राइजिंग राजस्थान कार्यक्रम में हुए समझौते तेजी से धरातल पर भी आते हुए दिख रहे हैं क्योंकि इन समझौते के क्रियान्वयन के लिए भजनलाल शर्मा ने बाकायदा एक अलग विभाग ही बना दिया है। वह डिपार्मेंट सिर्फ इन समझौते के क्रियान्वयन का काम ही देख रहा है, मुख्य सचिव इस पूरे विभाग की गतिविधियों पर फीडबैक लेते रहते हैं और फीडबैक को मुख्यमंत्री तक पहुंचाते रहते हैं। जहां मुख्यमंत्री का बात करना जरूरी होता है, वहां मुख्यमंत्री खुद निवेदक से बात करते हैं इसलिए इस बार राइजिंग राजस्थान में समझौते करने वाले निवेशक राजस्थान सरकार से बचकर नहीं जा सकते। उन्हें यहां पर अपनी इकाई स्थापित करनी ही होगी। इसलिए निश्चित रूप से आने वाले सालों में राजस्थान में राइजिंग राजस्थान में हुए 35 लाख करोड़ रुपए के समझौते में से अधिकांश समझौते धरातल पर जब आएंगे तो राजस्थान में उद्योगों का अच्छा माहौल बनेगा। रोजगार की समस्या काफी हद तक दूर हो जाएगी और राजस्थान के रेवेन्यू में भी वृद्धि होगी, जो प्रदेश के सर्वांगीण विकास के लिए काफी मददगार साबित होगा, इसलिए राइजिंग राजस्थान के समझौते के क्रियान्वयन को लेकर भी कहीं ना कहीं केंद्र की मोदी सरकार भजनलाल सरकार से काफी प्रभावित है, यह भी एक वजह है जिसकी वजह से पीएम नरेंद्र मोदी ने भजनलाल शर्मा को शाबाशी दी।

तुरंत निर्णय लेने की क्षमता से भजनलाल की व्यक्तित्व में आया निखार

जानकार लोगों का कहना है कि कोई-सा भी क्षेत्र हो कई बार इस तरह की स्थितियां बन जाती है कि आपको हाथों-हाथ ही निर्णय लेना पड़ता है और अगर आप हाथों-हाथ निर्णय नहीं ले पाते हो तो मौका चूक जाने से बहुत बड़ी हानि भी उठानी पड़ सकती है। चाहे फिर आप पछताते रहो, इसी तरह की स्थितियां कई बार किसी भी राज्य के मुख्यमंत्री या फिर किसी देश के प्रधानमंत्री के सामने भी आ जाती है, जब आपको किसी मामले में तुरंत निर्णय लेना पड़ता है और निर्णय नहीं लेते हो तो फिर आपके राज्य, आपके देश को मौका छूट जाने पर नुकसान भी उठाना पड़ सकता है या फिर कोई बड़ा फायदा लेने से चूक भी सकते हो, इसलिए इंसान को हाजिर निर्णय लेने में भी सक्षम होना ही चाहिए और इस कार्य में भजनलाल शर्मा हमेशा आगे रहे हैं। कई बार उनके सामने कई बड़े-बड़े मामलों में हाथों-हाथ निर्णय लेने की नौबत का सामना करना पड़ा और उन्होंने हाथों-हाथ निर्णय लिए और वह निर्णय राजस्थान की पब्लिक के लिए और राजस्थान के सर्वांगीण विकास के लिए काफी फायदेमंद भी साबित हुए। मुख्यमंत्री के तौर पर भजनलाल शर्मा ने अपने अब तक के कार्यकाल में कई बड़े-बड़े निर्णय लिए चाहे वह ईस्टर्न कैनल योजना को लेकर मध्यप्रदेश सरकार से समझौता करने की बात हो या फिर यमुना जल बंटवारे को लेकर हरियाणा सरकार से समझौता करने के बाद हो या फिर माही डैम को लेकर गुजरात सरकार से समझौता करने की बात हो, इन महत्वपूर्ण विषयों पर निर्णय लेने में भजनलाल शर्मा ने कभी भी विलंब नहीं किया। जबकि यह सारे विवाद पिछले कई सालों से चले आ रहे हैं, जो हल नहीं हो पा रहे थे लेकिन भजनलाल शर्मा ने अपने चातुर्य और बुद्धि कौशल से इन सब विवादों को सुलझाने में ज्यादा विलंब नहीं किया। विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्री और अधिकारियों के साथ एक बैठक में ही भजनलाल शर्मा ने इन बड़े-बड़े मामलों को सुलझा लिया, जो राजस्थान की पब्लिक के लिए आने वाले दिनों में काफी फायदेमंद साबित होंगे। इसलिए कहा जा सकता है कि भजनलाल शर्मा में तुरंत निर्णय लेने की अचूक क्षमता है।

डॉ. सतीश पूनियां की पुस्तक 'अग्निपथ नहीं जनपथ' का विमोचन राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया, भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़, वरिष्ठ नेता राजेंद्र राठौड़, नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली, भीलवाड़ा जिला प्रमुख बरजी बाई भील ने किया

जयपुर, 12 अक्टूबर, 2025। भाजपा हरियाणा प्रभारी एवं भाजपा राजस्थान पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सतीश पूनियां की विधायक कार्यकाल (2018-2023) पर आधारित पुस्तक 'अग्निपथ नहीं जनपथ' (संवाद से संघर्ष) का विमोचन पंजाब के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया, भाजपा राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़, भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़, नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली, भीलवाड़ा जिला प्रमुख बरजी बाई भील ने किया।

पुस्तक 'अग्निपथ नहीं जनपथ' पुस्तक का लोकार्पण और कृति चर्चा जयपुर के कॉन्स्टीट्यूशन क्लब में आयोजित हुई, जिसमें प्रदेशभर से पार्टी कार्यकर्ता, मंत्रीगण, विधायकगण, पार्टी पदाधिकारी, संपादकगण, पत्रकार, लेखक, उद्यमी, शासन प्रशासन व आमजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पंजाब के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया, विशिष्ट अतिथि नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली, पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ और भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़, अध्यक्षता भीलवाड़ा जिला प्रमुख बरजी बाई भील सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे। यह आयोजन राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर एवं वेरा प्रकाशन, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में हुआ। सभी वक्ताओं ने भारत के मजबूत लोकतंत्र की प्रशंसा करते हुये कहा कि, विचारधाराएं अलग हो सकती हैं, लेकिन जनहित में सभी को एकजुट होकर काम करना चाहिए, इस बात का सभी से आह्वान किया।

पुस्तक विमोचन कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य के लिए एफ.एम. आर.जे. कार्तिक, कवयित्री एवं लेखिका शिवांगी सिंह, एडवोकेट एवं सोशल मीडिया चिंतक मनमीत सोनी, कवि दिनेश कुमार सूत्रधार और साहित्यकार नीलू शेखावत को सम्मानित किया गया। मंच संचालय लाडनूं राजकीय कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य गजादान चारण, राजस्थान साहित्य अकादमी (उदयपुर) के सचिव बसंत सोलंकी ने आभार व्यक्त किया। पुस्तक 'अग्निपथ नहीं जनपथ' पुस्तक का लोकार्पण और कृति चर्चा जयपुर के कॉन्स्टीट्यूशन क्लब में आयोजित हुई। राजस्थान सरकार के कैबिनेट मंत्री मदन दिलावर, झाबर सिंह खर्रा, सुमित गोदारा, सांसद घनश्याम तिवाड़ी, राव राजेन्द्र सिंह, विधायक श्रीचंद कृपलानी, पूर्व सांसद रामचरण बोहरा, डॉ.शैलेष सिंह, कैलाश वर्मा, महेन्द्रपाल मीणा, शोभा चौहान, आदूराम मेघवाल सहित प्रदेशभर से पार्टी कार्यकर्ता, मंत्रीगण, विधायकगण, पार्टी पदाधिकारी, संपादकगण, पत्रकार, लेखक, उद्यमी, शासन प्रशासन व आमजन उपस्थित रहे।

भाजपा राजस्थान अध्यक्ष रहते हुए सतीश पूनियां ने जिन जनमुद्दों के लिये सड़क पर संघर्ष किया आज उन्हीं की बुनियाद पर भाजपा की भजनलाल सरकार का जन्म हुआ- राजेंद्र राठौड़

राजेन्द्र राठौड़ ने संबोधन में कहा कि, अग्निपथ पर तपे बिना जनपथ नहीं मिलता, अग्निपथ पर चलकर जो कुंदन की तरह तपता है, वही जनपथ तक पहुंचता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी अग्निपथ पर चलकर देश के शीर्ष तक पहुंचे हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा के नेता प्रतिपक्ष के रूप में गुलाबचंद कटारिया सुबह 9.30 बजे से विधानसभा में बैठ जाते थे। ऐसी गंभीरता मैंने केवल भैरोसिंह शेखावत और गुलाबचंद कटारिया में देखी है। राजेन्द्र राठौड़ ने कहा कि, यहां पक्ष के रूप में सतीश पूनियां विराजे हैं, प्रतिपक्ष के रूप में टीकाराम जूली विराजे हैं, निष्पक्ष के रूप में महामहिम राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया विराजे हैं, एक धरा के रूप में भीलवाड़ा जिला प्रमुख बरजी बाई भील विराजी हैं, यह बहुत विरला मौका है जो लंबे अरसे बाद मिला है। पुस्तक का शीर्षक अग्निपथ नहीं जनपथ- संवाद से संघर्ष तक, यह सतीश पूनियां के खुद के राजनीतिक संघर्ष के साथ-साथ आने वाले दिनों में राजनीति के विद्यार्थियों के लिये एक मार्गदर्शक बनेगा। सतीश पूनियां एक ऐसे मंझे राजनेता हैं जो जनहित के राजनीतिक मुद्दों को पकड़ना, उन्हें तलाशना और फिर उन्हें जनता का मुद्दा बना देना, यह खूबी मैंने आपके व्यक्तित्व में देखी है। जिन मुद्दों को भाजपा राजस्थान अध्यक्ष रहते हुए सतीश पूनियाँ ने सड़क पर संघर्ष करते हुए जन मुद्दे बना दिए, आज उन्हीं की बुनियाद पर हमारी भाजपा की भजनलाल सरकार का जन्म हुआ है। हमारी भाजपा की सरकार की बुनियाद में आपके सड़कों पर किए गए संघर्ष और जिन मुद्दों को आपने जनमुद्दा बनाया, उसी की वजह से आज भाजपा की भजनलाल सरकार का जन्म हुआ है। निश्चित तौर पर जो अग्निपथ पर चलता है, तपकर कुंदन बनता है और जो अग्निपथ पर कुंदन की तरह तप कर आगे बढ़ता है, जनपथ उसी को मिलता है और ताजा उदाहरण देखें तो दुनिया में सबसे लोकप्रियता नरेंद्र मोदी है, वह भी अग्निपथ के वाहक बनकर जनपथ के वाहक बने हैं, जब संघर्ष और संवाद की बात आप करते हैं, हर संघर्ष के पीछे संवाद उसका मूल मंत्र होता है। उन्होंने सतीश पूनियां की ओर से लिखी गई पुस्तक के शीर्षक अग्निपथ से जनपथ के बारे में कहा कि जैसे सतीश पूनियां का संघर्ष से भरा जीवन रहा इन्होंने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद भाजपा के युवा मोर्चा में रहते हुए और भाजपा राजस्थान के अध्यक्ष की कमान संभालने के दौरान हमेशा सड़कों पर लड़ाई लड़ी और बाद में भाजपा का प्रदेश अध्यक्ष रहने के दौरान भी हमेशा सड़कों पर आंदोलन करते नजर आए इसलिए इनकी ओर से लिखी गई पुस्तक उन युवाओं के लिए काफी प्रेरणादायक साबित होगी जो राजनीति में अपना कैरियर बनाना चाहते हैं।

सतीश पूनियां के प्रोग्राम में यह जानने आया हूँ कि कांग्रेस हरियाणा चुनाव कैसे हारी- टीकाराम जूली

राजस्थान विधानसभा नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने संबोधन में कहा कि, सतीश पूनियां, राजेंद्र राठौड़, गुलाबचंद कटारिया, घनश्याम तिवाड़ी जैसे नेताओं को वह काफी मिस करते हैं विधानसभा में, क्योंकि इन नेताओं से उन्होंने काफी कुछ सीखा है, इन नेताओं का विधानसभा में समय पर आना समय पर जाना प्रत्येक बैठक में शामिल होना, प्रत्येक मुद्दे पर तथ्यात्मक तरीके से अपनी बात कहना सदन की मर्यादाओं का ध्यान रखना, इन वरिष्ठ नेताओं की यह विशेषता थी जिन्हें देखकर सदन में पहली बार आया विधायक भी काफी कुछ सीखता था, लेकिन वह खुद भी इन नेताओं को आज राजस्थान विधानसभा में काफी मिस करते हैं। टीकाराम जूली ने कार्यक्रम में कहा कि राजस्थान की राजनीति में सतीश पूनियां एक सभ्य राजनेता हैं, लोकतंत्र और विधानसभा की मर्यादाओं को अच्छी तरह से समझते हैं, सतीश पूनियां एक अच्छे लीडर, अच्छे वक्ता, अच्छी सोच वाले राजनेता हैं। जूली ने कहा, हरियाणा के लोगों का मस्तमौला स्वभाव होता है और आजकल यही स्वभाव सतीश पूनियां का भी हो गया है, मैं खास कर सतीश पूनियां के प्रोग्राम में यह जानने आया हूँ कि हम हरियाणा चुनाव कैसे हारे, सब कह रहे थे कांग्रेस जीत रही हैं, जीत रही है, लेकिन फिर हरियाणा में हारी कैसे कांग्रेस यह आज तक पता नहीं चल पाया?

राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया राजनीति के आदर्श हैं, सतीश पूनियां कुशल संगठनकर्ता हैं पार्टी की मजबूती के लिये प्रदेश में उन्होंने खूब काम किया- मदन राठौड़

मदन राठौड़ ने कहा, राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया राजनीति के आदर्श हैं, उन्होंने कहा कि सतीश पूनियां कुशल संगठनकर्ता हैं, पार्टी की मजबूती के लिये प्रदेश में उन्होंने खूब काम किया। मदन राठौड़ ने सतीश पूनियां की ओर इंगित करते हुए कहा कि सतीश भाईसाहब मैं तो हमेशा आपके आगे चल चलकर आपका रास्ता बनाया है और भाईसाहब अब आप चिंता मत कीजिए आगे भी मैं आपके लिए रास्ते बनाते रहूंगा.. यह सुनकर सतीश पूनियां और मंच पर मौजूद सभी लोग एवं सभागार में मौजूद लोग जोर-जोर से हंसने लगे। सतीश पूनियां की कई खूबियों का तो उन्हें पहले से पता था लेकिन उनकी यह किताब देखकर उन्हें आज महसूस हुआ कि वह एक अच्छे लेखक भी हैं।

संगठन की मजबूती के लिये मैंने सतीश पूनियां को पदयात्राएं करते, संघर्ष करते देखा है, मेरी सतीश पूनियां की पहचान राजस्थान के सूदूर अंचल में बैठे कार्यकर्ता का मनोबल बढ़ाने से लेकर प्यार देते रहने का कार्य है– गुलाबचंद कटारिया

राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया के मुख्य आतिथ्य में सतीश पूनियां की ओर से लिखी गई पुस्तक 'अग्निपथ नहीं जनपथ' का विमोचन किया, इस गरिमामय मौके पर गुलाबचंद कटारिया ने कहा कि यह पुस्तक लिखकर सतीश पूनियां ने लोकतंत्र की खूबसूरती के लिये ऐतिहासिक कार्य किया है और वह खुद इस पुस्तक से इतने प्रभावित हैं कि उन्हें भी पुस्तक लिखने की प्रेरणा मिली है, क्योंकि इस पुस्तक के माध्यम से राजस्थान विधानसभा की कार्यप्रणाली, नेता प्रतिपक्ष की भूमिका, स्पीकर की भूमिका, राजस्थान विधानसभा से जुड़ी हर प्रक्रिया के बारे में जो जानकारी दी गई है, वह वास्तव में अपने आप में एक बड़ा कार्य है और इसके लिए सतीश पूनियां धन्यवाद के पात्र हैं। उन्होंने कहा कि इस पुस्तक से आमजन को भी काफी कुछ सीखने को मिलेगा, विधानसभा के बारे में उन्हें अच्छी जानकारी मिलेगी इसके अलावा नए विधायकों और जो युवा राजनीति में अपना कैरियर बनाना चाहते हैं उन्हें काफी कुछ इस पुस्तक से सीखने को मिलेगा। उन्होंने कहा कि सतीश पूनियां ने इस पुस्तक का विमोचन उनके हाथों से करवाया यह भी उनके इतने बड़े राजनीतिक जीवन में सबसे बड़ा सुखद क्षण है यह भारत के लोकतंत्र की खूबसूरती को दर्शाता है। कटारिया ने हमारे विचार अलग–अलग हो सकते हैं लेकिन जब देशभक्ति और जनहित के मुद्दे सामने होते हैं तो हम सब एक होते हैं, यही भारत के लोकतंत्र की खूबसूरती है, उन्होंने कहा कि मंच पर भीलवाड़ा जिला प्रमुख बरजी बाई भील का मौजूद होने से इस कार्यक्रम का गौरव और बढ़ जाता है।

मैं जब राज्यपाल पद से रिटायर हो जाऊंगा तो फिर साधारण कार्यकर्ता बन जाऊंगा इसलिए एक श्रेष्ठ कार्यकर्ता बनकर आदमी लंबे समय तक राजनीति में खुद को स्थाई रख सकता है। इसलिए सतीश पूनियां की ओर से लिखी गई यह पुस्तक एक अमूल्य खजाना है जिसे पढ़कर काफी कुछ जीवन में हासिल किया जा सकता है। कटारिया ने कहा कि राजनीति में हार–जीत नहीं, बल्कि जनहित के लिए किया गया कार्य ही पहचान बनाता है। मैंने सतीश पूनियां को विद्यार्थी परिषद लेकर युवा मोर्चा और भाजपा संगठन के लिये जमीन पर मेहनत करते देखा है, अजमेर से भरतपुर की युवा मोर्चा की 1999 में पदयात्रा की हो आपने या फिर पार्टी प्रदेश अध्यक्ष के रूप में पूरे राजस्थान में आपने संगठन को जन–जन तक पहुंचाने की बात हो, जनहित के मुद्दों को सड़क से सदन तक मुखरता से उठाना, यह सब आपके व्यक्तित्व की खूबियां हैं, पद आएंगे, जायेंगे लेकिन मेरी आपकी पहचान जयपुर से लेकर राजस्थान के सूदूर अंचल में बैठे कार्यकर्ता के बीच में रहना, उसका मनोबल बढ़ाने का कार्य है, कार्यकर्ता को प्यार देते रहना है। उन्होंने कहा कि भैरोसिंह शेखावत सिखाते थे, जो हमें कहते थे राजस्थान को जानना है तो सदन में बैठो। दुर्भाग्य है कि अब सदन से ज्यादा ध्यान तबादलों पर रहता है। कटारिया ने कहा कि जो अग्निपथ से गुजरता है वही जनपथ को समझता है। विचार भले अलग हों, लेकिन सौहार्द बना रहना चाहिए।

पिछली सरकार में बदनाम हुए विभाग को आबाद कर रहे कन्हैया लाल चौधरी

जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग में भ्रष्टाचार की जीम हुई परतों को उखाड़ फेंकने में कामयाब रहे, मुख्यमंत्री भजनलाल और प्रदेश के लोगों की उम्मीद पर भी उतर रहे खरा, गांव और शहर के लोगों को समुचित पीने का पानी उपलब्ध कराने की दिशा में तेजी से कर रहे काम

जयपुर। राजस्थान भौगोलिक क्षेत्र से पूरे देश में सबसे बड़ा है। मरुस्थलीय प्रदेश माने जाने वाले इस प्रदेश में पीने के पानी की समस्या पूरे देश में सबसे ज्यादा गंभीर है। पिछली गहलोत सरकार पानी के क्षेत्र में करोड़ों के घोटाले को लेकर काफी चर्चित रही इसलिए प्रदेश में सत्ता परिवर्तन के साथ ही भजनलाल सरकार के लिए भी पानी की समस्या बड़ी चुनौती के रूप में खड़ी थी। खुद मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा कई बार कह चुके हैं कि शासन की बागडोर हाथ में लेने के बाद उन्हें पानी सबसे बड़ी चुनौती के रूप में नजर आया, इसलिए कन्हैयालाल चौधरी को जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग और भूजल विभाग जिम्मेदारी मिलना यह दिखाता है कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और दिल्ली में बैठे भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेताओं का चौधरी की काबिलियत पर पहले से ही कितना भरोसा था क्योंकि यह विभाग एक तरफ जहां बड़े-बड़े भ्रष्टाचारों को लेकर प्रदेश की जनता का विश्वास हो चुका था तो दूसरी तरफ केंद्र की मोदी सरकार भी इस विभाग को लेकर काफी चिंतित थी क्योंकि कांग्रेस पार्टी की सरकार में केंद्र सरकार ने हजारों करोड़ों रुपए राजस्थान सरकार को पानी की समस्या के तहत समाधान के लिए भेजे थे लेकिन प्रदेश में कोई बड़े-बड़े करोड़ों रुपए के घोटाले की वजह से दिल्ली से भेजे गए पैसे का सदुपयोग जनता के हितों के लिए नहीं हो पाया था इसलिए मोदी सरकार और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के लिए जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग की कार्यशैली और छवि को सुधारना बड़ी चुनौती थी और यह तभी संभव था, जब इस विभाग की बागडोर एक ईमानदार कर्मठ समर्पित और सेवाभावी स्वभाव राजनेता के हाथों में दी जाए, ऐसे में मुख्यमंत्री शर्मा और दिल्ली में बैठे भाजपा के नेताओं को मालपुरा से जीत की हैट्रिक करने वाले कन्हैयालाल चौधरी एक बड़े विकल्प के रूप में नजर आए और चौधरी पर काफी भरोसा करके उन्हें इस महत्वपूर्ण जनता से जुड़े विभाग की जिम्मेदारी दी गई इसलिए यह तो मानना ही पड़ेगा की चौधरी के राजनीतिक कैरियर के कामकाज और उनकी ईमानदारी से मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और दिल्ली में बैठे पार्टी के नेता पहले से ही जानते थे इसलिए चौधरी के जन सेवा भाव के रवैया को देखते हुए उन्हें इस महत्वपूर्ण विभाग के लायक सबसे उचित समझा गया अब पिछले करीब 22 महीना के कार्यकाल में मंत्री के तौर पर जिस तरह का श्रेष्ठ और उत्कृष्ट मैनेजमेंट इस विभाग का करके दिखाया है उससे मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को भी यकीन हो गया है कि उन्होंने चौधरी के हाथों में इस विभाग की बागडोर देकर कोई गलती नहीं की निश्चित रूप से मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के मार्गदर्शन में जन स्वास्थ्य अभियंत्रिक विभाग में अब तक जो बड़े पैमाने पर कार्य हुए जो बड़े ऐतिहासिक निर्णय और फैसले हुए उनसे अब हर कोई यह कह रहा है कि पिछले 22 महीना में सबसे ज्यादा कार्य प्रदेश में पानी के क्षेत्र में ही हुआ।

मालपुरा विधानसभा क्षेत्र के लोगों के बन गए हैं 'कन्हैया'

पिछले विधानसभा चुनाव में कन्हैया लाल चौधरी ने लगातार तीसरी बार मालपुरा विधानसभा सीट से भाजपा के टिकट पर चुनाव जीता। यह उनकी प्रदेश के राजनीतिक गलियारों में एक शानदार हैट्रिक मानी जा रही है। चौधरी ने पहला चुनाव 2013 में जीता था, उस समय वसुंधरा राजे के नेतृत्व में भाजपा की सरकार का गठन भी हुआ, जिसका फायदा मालपुरा क्षेत्र के लोगों को मिला। खुद की पार्टी की सरकार होने से क्षेत्र में व्यापक पैमाने पर विकास कार्य भी करवाए लेकिन 2018 में कांग्रेस पार्टी की सरकार का गठन होने से चौधरी अपने निर्वाचन क्षेत्र में मन मुताबिक कार्य नहीं करवा सके। इस बात को क्षेत्र के लोग भी जानते थे कि चौधरी अपनी ओर से क्षेत्र के विकास कार्यों को लेकर कोई कमी नहीं छोड़ रहे राजस्थान विधानसभा में भी काफी प्रमुखता से अपने क्षेत्र की समस्याओं को उठाते हुए नजर आए लेकिन कहीं ना कहीं खुद की पार्टी की सरकार का नहीं होना उनके लिए मुसीबत बना रहा। हालांकि इस दौरान चौधरी ने बड़े-बड़े जन आंदोलन के माध्यम से क्षेत्र की समस्याओं को लेकर गहलोत सरकार के खिलाफ जोरदार सड़कों पर लड़ाई लड़ते रहे विधानसभा में भी दमदार तरीके से अपने निर्वाचन क्षेत्र के लोगों की तकलीफों को उठाते रहे, इसलिए चौधरी के जन संघर्ष की भावना को देखकर हर जाति और बिरादरी के लोग उनसे लगातार जुड़ते रहे सरकार चाहे किसी भी पार्टी की रही हो चौधरी ने अपने घर के दरवाजे अपने क्षेत्र के लोगों के लिए 24 घंटे खुले रखे। किसान, गरीब, मजदूर और वंचित लोगों के सुख-दुख में शामिल होने के उनके इस स्वभाव ने उन्हें क्षेत्र के लोगों में एक सेवाभावी राजनेता के रूप में स्थापित कर दिया, जिसमें शिक्षा के क्षेत्र में उनके निजी स्कूलों ने भी चौधरी की लोकप्रियता में चार चांद लगाए हैं क्योंकि इस स्कूल के माध्यम से भी चौधरी क्षेत्र के छोटेबच्चों से लेकर युवा और हर आयु वर्ग के लोगों में काफी पॉपुलर हो गए। यह स्कूल चौधरी के पैसा कमाने का जरिया नहीं है बल्कि उन्होंने क्षेत्र के बच्चों के सर्वांगीण और समुचित विकास का संकल्प लेकर इस स्कूल की स्थापना की और इस संकल्प के साथ इस स्कूल में बच्चों को शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत करने के साथ-साथ उन्हें तकनीकी रूप से भी सक्षम किया जा रहा है। इस स्कूल को चौधरी की पत्नी राधा चौधरी संचालित करती हैं लेकिन स्कूल की गतिविधियों पर मंत्री बनने के बावजूद भी कन्हैयालाल खुद नजर जमाए रखते हैं। किसी भी समाज और बिरादरी का बच्चा आर्थिक तंगी की वजह से पढ़ाई ना छोड़े इस बात का कन्हैयालाल खुद ध्यान रखते हैं इसलिए कन्हैयालाल के व्यक्तित्व के निखार में इस स्कूल का भी बड़ा योगदान रहा है। सामाजिक सरोकारों के कार्यों में तो शुरू से ही अग्रणी रहे हैं और अब भी मंत्री होने के बाद भी हर छोटे से छोटे और बड़े से बड़े सामाजिक सरोकार के काम में अपनी भागीदारी निभाते हैं इसलिए क्षेत्र के लोगों के दिलों में राज कर रहे हैं, इसी वजह से इन्होंने तीसरी बार इस क्षेत्र से जीत का सेहरा अपने सिर पर बांधा है।

राम जल सेतु लिंक परियोजना के निर्माण प्रक्रिया पर है पूरा फोकस

प्रदेश की भजनलाल सरकार में राम जल सेतु लिंक परियोजना पर काम शुरू होना सरकार की एक बहुत बड़ी उपलब्धि माना जा रहा है। 17 दिसंबर 2024 को जयपुर में संशोधित पार्वती, काली सिंध, चंबल नदी जोड़ो परियोजना के तीन स्तरीय अनुबंध का आदान-प्रदान हुआ। पार्वती, काली सिंध, चंबल नदी और पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना यह परियोजना राजस्थान के 17 जिलों में 3.25 करोड़ लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध करवाएगी और मध्य प्रदेश के 13 जिलों में पेयजल व सिंचाई की व्यवस्था को सशक्त करेगी। इस पहल से न केवल लाखों लोगों की पेयजल आवश्यकताएं पूरी होगी बल्कि किसानों के आजीविका में भी सुधार होगा। जन स्वास्थ्य अभियंत्रिक विभाग के मंत्री कन्हैयालाल चौधरी खुद किसान परिवार से ताल्लुक रखते हैं खुद खेती करते हैं इसलिए जानते हैं कि किसान आर्थिक रूप से तभी मजबूत होगा, जब खेत में उसे समुचित पानी और बिजली मिले इसलिए राम जल सेतु लिंक परियोजना के माध्यम से प्रदेश के पूर्वी हिस्से के जिले के किसान और आमजन को पानी की समस्या से छुटकारा मिलेगा। इस परियोजना को धरातल पर लाने में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की बड़ी भूमिका रही केंद्र सरकार ने भी पूरा सहयोग किया। मुख्यमंत्री शर्मा ने मध्य प्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री से बातचीत के माध्यम से वर्षों से चले आ रहे विवाद को सुलझाया, अब इस योजना के प्रथम चरण का कार्य प्रगति पर है। जन स्वास्थ्य विभाग का मंत्री होने के नाते इस योजना से जुड़े सभी कार्यों पर चौधरी बारीकी से नजर जमाए हुए हैं। निर्माण कार्यों की गुणवत्ता से लेकर निर्माण कार्य निर्धारित अवधि में हो इसके लिए चौधरी नियमित रूप से इस पूरे कार्य का फीडबैक लेते रहते हैं और अपनी ओर से आवश्यक दिशा निर्देश भी निर्माण करने वाली कंपनी को देते रहते हैं। मुख्यमंत्री शर्मा ने चौधरी को इस पूरे कार्य की मॉनिटरिंग की जिम्मेदारी भी दी हुई है, जानकारी के अनुसार पार्वती, काली सिंध, चंबल नदी जोड़ो परियोजना से राजस्थान के 17 जिले जयपुर, ब्यावर, अलवर, खैरथल तिजारा, कोटपूतली, बहरोड, अजमेर, झालावाड़, बारा, कोटा, बूंदी, सवाई माधोपुर, दौसा, करौली, धौलपुर, भरतपुर, डीग और टोंक को पानी मिल सकेगा। वही इस प्रोजेक्ट से मध्य प्रदेश के 13 जिलों गुना, मुरैना, शिवपुरी, देवास, आगर, मालवा, भिंड, शिवपुरी, उज्जैन, सीहोर, मंदसौर, इंदौर, शाहजहांपुर, राजगढ़ को पीने और सिंचाई के लिए पानी मिल सकेगा।

यमुना जल समझौते के क्रियान्वयन के सतत प्रयास में जुटे हैं चौधरी

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शेखावाटी के लोगों को यमुना का पानी उपलब्ध करवाने के लिए हरियाणा सरकार से जो समझौता किया, वह भी अपने आप में भजनलाल सरकार की एक बड़ी उपलब्धि है। इसलिए जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग का मंत्री होने के नाते इस योजना के क्रियान्वयन को लेकर भी कन्हैया लाल चौधरी काफी अलर्ट मोड पर हैं मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देश पर इस योजना से जुड़ी तमाम तरह की कागजी प्रक्रिया और हरियाणा सरकार से होने वाली मीटिंगों की जिम्मेदारी मंत्री होने के नाते चौधरी के कंधों पर ही है। मुख्यमंत्री शर्मा ने 17 फरवरी 2024 को हरियाणा के तत्कालीन मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर के साथ जमुना जल समझौता किया था, जिसके मुताबिक राजस्थान के चूरू, सीकर, झुंझुनू जिलों को 577 मिलियन क्यूबिक मीटर पानी मिलेगा। इस समझौते से राजस्थान को अपने हिस्से का अतिरिक्त पानी भी मिल सकेगा। यमुना नदी देश की प्रमुख नदियों में से एक होने के साथ ही उत्तर भारत की विभिन्न राज्यों में जल आपूर्ति का मुख्य स्रोत है। इसका पानी उत्तरप्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान और हिमाचल प्रदेश जैसे राज्यों में पीने का पानी सिंचाई और उद्योगों के लिए महत्वपूर्ण है।

कट्टर हिंदुत्ववादी संघ पृष्ठभूमि के नेता के रूप में माने जाते हैं कन्हैयालाल

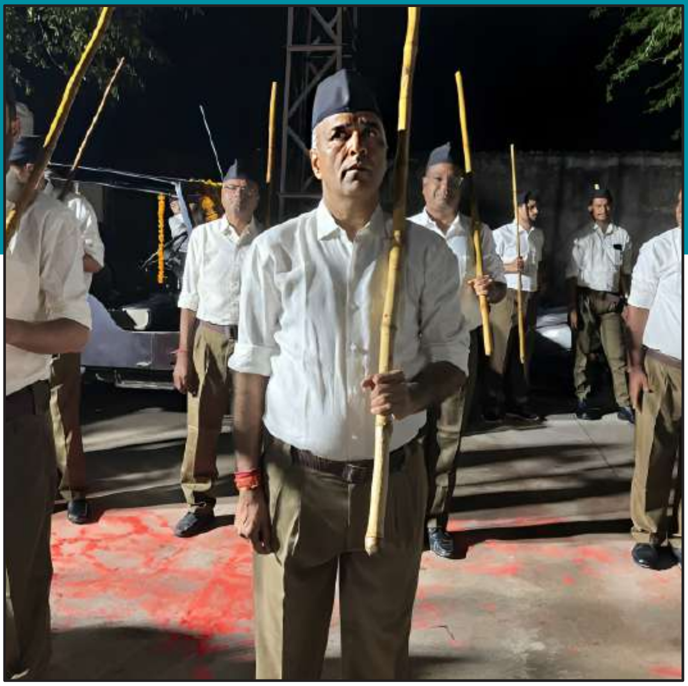

कन्हैयालाल चौधरी मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की तरह धार्मिक प्रवृत्ति के हैं भले ही किसान परिवार और जाट परिवार में जन्मे लेकिन उन्हें बचपन से ही माता-पिता से अच्छे संस्कार मिले और पूजा पाठ में शुरू से ही उनकी रुचि रही, जो अब तक उनकी दिनचर्या का हिस्सा बना हुआ है। उनके माथे पर हमेशा पूजन का तिलक भी नजर आता है, जो उनकी धार्मिक आस्था का प्रतीक है। हालांकि चौधरी किसी धर्म के खिलाफत और किसी धर्म का अपमान करने में विश्वास नहीं रखते लेकिन वह कट्टर हिंदूवादी भाजपा नेता के रूप में माने जाते हैं। जब सनातन धर्म हिंदू और गाय पर अत्याचार या अपमान होने की खबर उन्हें मिलती है वे तुरंत मौके पर पहुंच कर घटना की कड़ी निंदा तो करते ही हैं, इसके अलावा दोषी लोगों के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग को लेकर आंदोलन करने से भी पीछे नहीं हटते। उनके निर्वाचन क्षेत्र में क्षेत्र में हिंदुओं के पलायन को लेकर चौधरी ने राजस्थान विधानसभा के अंदर और राजस्थान विधानसभा के बाहर पुरजोर तरीके से अपना विरोध जताया और इसके लिए सड़कों पर भी लड़ाई लड़ी। प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार का गठन होने के बाद पत्रकारों के सवाल पर कन्हैयालाल चौधरी ने साफ कहा था कि अब उनके क्षेत्र में एक भी हिंदू का पलायन नहीं होगा। हिंदुओं की रक्षा और संरक्षण के लिए हर जरूरी उपाय और कदम उठाए जाएंगे। इस बयान का असर देखने को भी मिल रहा है। अब मालपुरा क्षेत्र में हिंदू खुद को सुरक्षित महसूस करने लगे हैं और हिंदुओं ने पलायन का विचार भी त्याग दिया है। चौधरी संघ पृष्ठभूमि के नेता हैं, इसलिए अनुशासन, राष्ट्रभक्ति, राष्ट्र प्रेम, सनातन धर्म की रक्षा, गौ माता की रक्षा, गौ माता का संरक्षण इन सब महत्वपूर्ण विषयों पर उनका पूरा फोकस हमेशा रहता है। उनका राजनीति में आने का लक्ष्य भोग विलास जीवन नहीं बल्कि जन सेवा और गरीब निर्धन जरूरतमंद लोगों की हर तरह से सहयोग और मदद करना था, जिसमें चौधरी को पूरे नंबर दिए जा सकते हैं क्योंकि उनका जो व्यवहार और उनका जो नैतिक आचरण विधायक और मंत्री बनने से पहले था वैसा ही उनका आचरण और व्यवहार विधायक और मंत्री बनने के बाद भी है उनमें बिल्कुल भी बदलाव नहीं आया है।

जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग से भ्रष्टाचार को मिटाने का उठाया बीड़ा और कामयाब भी रहे

यह जग जाहिर है पिछले गहलोत सरकार में पानी के क्षेत्र में कई बड़े-बड़े घोटाले हुए जन स्वास्थ्य अभियंत्रिक विभाग के कई अधिकारी और कर्मचारी जेल में भी गए। इस मामले में गहलोत सरकार के एक मंत्री भी अभी जेल में हैं, उनकी जमानत नहीं हो पा रही है। पूरे 5 साल तक जन स्वास्थ्य अभियंत्रिक विभाग टेंडर प्रक्रिया में गड़बड़ी, लापरवाही, लाल फीता शाही, भ्रष्टाचार इत्यादि को लेकर काफी बदनाम और चर्चा में रहा। इसकी वजह से यह विभाग प्रदेश के लोगों का एक तरह से विश्वास खो चुका था लेकिन प्रदेश में भाजपा की सरकार के गठन के बाद और इस विभाग की जिम्मेदारी कन्हैयालाल चौधरी के हाथों में आने के बाद चौधरी ने सबसे पहली प्राथमिकता इस विभाग के वैभव को वापस लौटना था। क्योंकि भ्रष्टाचार की जड़ काफी मजबूती से इस विभाग में जम चुकी थी। इस बात को चौधरी अच्छी तरह से जानते थे इसीलिए उन्होंने विभागीय अधिकारियों की मीटिंग में भी चेतावनी देती थी कि अब से पहले जो हुआ उसमें भी दोषियों को माफ नहीं किया जाएगा और अब अगर कोई भ्रष्टाचार में लिप्त पाया गया तो उसके खिलाफ तुरंत कड़ा एक्शन भी होगा चौधरी ने सार्वजनिक रूप से यह तक कह दिया था की विभाग में भ्रष्टाचार मिटाने के लिए अगर पूरे विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों को भी सस्पेंड करना पड़े तो करेंगे, चाहे विभाग खाली हो जाए लेकिन भ्रष्टाचार किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं होगा। चौधरी के गर्म तेवर और चेतावनी का व्यापक असर देखने को भी मिला है। पिछले 22 महीना में जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग नए कलेवर और नए अंदाज में नजर आने लगा है। विभाग मेंपोस्टेड अधिकारियों और कर्मचारियों की कार्यशैली में नयापन और बदलाव आया है। भ्रष्टाचार के हल्की-सी शिकायत भी पिछले 22 महीना में उजागर नहीं हुई है, इसलिए यह तो कहना ही पड़ेगा की मंत्री के तौर पर जो प्रबंधन चौधरी ने, इस बिगड़े हुए विभाग का किया है, वह काफी शानदार और बेमिसाल है। अब इस विभाग के प्रति प्रदेश की जनता का भरोसा मजबूत भी हुआ है। कई बड़ी योजनाएं और कई बड़े फैसले होने से लोगों को राहत भी मिल रही है। यह सब जो बदलाव आया है वह चौधरी के बेस्ट सुपरविजन का ही परिणाम है।

देवास तृतीया और देवास चतुर्थ परियोजनाओं को लेकर भी गंभीर है मंत्री कन्हैयालाल चौधरी

भविष्य की पेयजल जरूरत को पूरा करने के लिए देवास तृतीया और देवास चतुर्थ परियोजनाओं को तैयार किया गया है क्योंकि वर्ष 2041 तक उदयपुर की जनसंख्या 875874 तक पहुंचाने का अनुमान है। इसलिए पानी की डिमांड भी काफी बढ़ेगी, इसलिए देवास तृतीय परियोजना में गोगुंदा तहसील के नातिया थल गांव के पास तीसरा बांध बनाया जाएगा, जिसमें 10.50 किलोमीटर सुरंग के जरिए जल की आपूर्ति देवास द्वितीय बांध से होगी और वह जल पिछोला झील में आएगा। इसी तरह से देवास चतुर्थ परियोजना के तहत गोगुंदा तहसील के अंबाला गांव के पास एक बांध बनाने की योजना है, जिससे 4.15 किलोमीटर लंबी सुरंग के माध्यम से जल देव देवास चतुर्थ बांध से देवास तृतीय बांध में और फिर पिछोला झील में आएगा। इन योजनाओं के क्रियान्वयन को लेकर भी सरकार अलर्ट है ताकि उदयपुर और आसपास के इलाकों के लोगों को पीने का पानी उपलब्ध हो सके। इन बांधों के निर्माण के लिए मंत्री के तौर पर कन्हैयालाल चौधरी के प्रयास युद्ध स्तर पर जारी है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने देवली उनियारा की सभा में खुद चौधरी की तुलना भगवान श्री कृष्ण से कर दी थी

पिछले अगस्त के महीने में एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत देवली उनियारा में एक बड़ा कार्यक्रम आयोजित किया गया था, जिसमें एक ही दिन में 60000 से ज्यादा पेड़ मालपुरा विधानसभा क्षेत्र में कन्हैयालाल चौधरी की अगुवाई में लगाए गए थे। इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा भी आए थे, उन्होंने स्थानीय विधायक कन्हैयालाल चौधरी के व्यवहार और कार्यों की जमकर तारीफ की।

मुख्यमंत्री शर्मा ने अपने भाषण में कहा कि अपने निर्वाचन क्षेत्र की समस्याओं को लेकर कन्हैयालाल काफी गंभीर रहते हैं, जब भी उनसे मिलने आते हैं तो कोई ना कोई अपने क्षेत्र की समस्या की पर्ची भी उनके हाथों में सौंप कर चले जाते हैं। अपने क्षेत्र के लोगों के प्रति इनका यह समर्पण भाव उन्हें सबसे अलग बनाता है। मुख्यमंत्री शर्मा ने अपने भाषण में कहा कि जिस तरह से भगवान श्री कृष्णा दीन दुखियों की सेवा किया करते थे वैसे ही आपके विधायक कन्हैयालाल है जिनका नाम ही भगवान श्री कृष्णा पर पड़ा हुआ है। उनके कार्य और उनका जनता के प्रति जुड़ाव भगवान श्री कृष्ण की तरह ही है। मुख्यमंत्री शर्मा की ओर से भरी सभा में अपनी ही पार्टी के किसी नेता और मंत्री का इस तरह से प्रशंसा करना इस बात का सबूत है कि भजनलाल सरकार के मंत्रिमंडल में मंत्री के रूप में कन्हैया लाल चौधरी के कार्यों व्यवहार औ उनकी वर्किंग स्टाइल से मुख्यमंत्री शर्मा काफी खुश और प्रभावित हैं। एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत अपने निर्वाचन क्षेत्र में कन्हैयालाल चौधरी ने रिकॉर्ड तोड़ नए पेड़ लगवाएं हैं क्योंकि चौधरी खुद जन स्वास्थ्य अभियंत्रिक विभाग के मंत्री हैं और वे जानते हैं कि पानी की स्थाई समस्या का समाधान हरे भरे राजस्थान से ही हो सकता है। ज्यादा पेड़ होंगे तो ज्यादा बरसात का होना भी पक्का है इसलिए वृक्षारोपण अभियान को लेकर चौधरी पहले दिन से ही काफी गंभीर और सजक रहे इसी का परिणाम है कि उन्होंने अपने निर्वाचन क्षेत्र में बड़े पैमाने पर नए पेड़ लगाए, जिससे वन मंत्री संजय शर्मा भी काफी खुश और प्रभावित नजर आए।

प्रदेश में कई नए बांध, हजारों किलोमीटर पाइपलाइन बिछाया और कई बड़ी नई परियोजनाओं पर कार्य शुरू

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने पिछले 22 महीना में पानी के क्षेत्र में जो कार्य किए हैं, उनसे जन स्वास्थ्य अभियंत्रिक विभाग पर कार्यों का जबरदस्त वर्कलोड आया है क्योंकि नए समझौते और नए परियोजनाओं के क्रियान्वयन से प्रदेश में कई जगहों पर बड़े-बड़े बांध का निर्माण होना है। प्रदेश भर में हजारों किलोमीटर पाइप लाइन का जाल बिछाना है, ऐसे अनेकों नए चुनौती भरे कार्य जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग को संपादित करने हैं। ऐसे में मंत्री होने के नाते कन्हैयालाल चौधरी के कंधों पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बहुत बड़ी और महत्वपूर्ण जिम्मेवारी दी हुई है। वैसे मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के मंत्री कन्हैयालाल चौधरी दोनों ही धार्मिक प्रवृत्ति के और सदाचारी राजनेता हैं इसलिए पानी की इस विकट समस्या को जड़ से मिटाने के लिए इन दोनों नेताओं ने जो बीड़ा उठाया है, वह वास्तव में नेक और पुण्य कार्य तो है ही इसके अलावा यह भाजपा सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जाएगी, जो राजस्थान के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज होगी कि भजनलाल सरकार ने मरू प्रदेश की पानी की समस्या को जड़ से खत्म कर दिया। इसमें कोई संदेह नहीं सरकार ने पानी के क्षेत्र में जो फैसले किए हैं और जिन योजनाओं का कार्य चालू है। जिस दिन यह योजनाएं पूरी होगी तो निश्चित रूप से राजस्थान कर कोना पानी से आबाद होगा।

पार्टी में गुटबाजी से हमेशा रहे दूर, पार्टी के संगठन को मजबूत करने में निभाई बड़ी भूमिका

कन्हैयालाल चौधरी की गिनती संघ पृष्ठभूमि के उन नेताओं में होती है, जो हमेशा पार्टी के लिए जीते हैं, पार्टी के लिए काम करते हैं, चाहे कोई सी भी राजनीतिक पार्टी हो पार्टी में कहीं ना कहीं किसी न किसी स्तर पर गुटबाजी होती ही है। राजस्थान भाजपा भी इससे अछूती नहीं है, राजस्थान भाजपा में भी समय-समय पर बड़े नेताओं में आपस में टकराव और खींचतान की स्थिति देखी गई है। हालांकि यह बात अलग है कि भाजपा में नेताओं की गुटबाजी कांग्रेस पार्टी की तरह बड़े स्तर पर खुलकर सामने नहीं आई लेकिन कन्हैयालाल चौधरी पार्टी की गुटबाजी से दूर रहे और पार्टी के सभी सीनियर नेताओं को शुरू से ही एक समान नजर से देखा, एक समान नजर से उनका सम्मान किया, सभी नेताओं को बैलेंस करते हुए प्रदेश भाजपा में उन्होंने खुद को बनाए रखा, जिसकी वजह से उन पर कभी भी किसी बड़े नेता के नाम का ठप्पा नहीं लगा, यह उनकी एक बहुत बड़ी खूबी रही है, जिसे राजस्थान भाजपा के सभी बड़े नेता और दिल्ली में बैठे पार्टी के रणनीतिकार भी अच्छी तरह से जानते हैं। चौधरी पार्टी को ही अपना माई बाप माना है और पार्टी ने संगठन में इन्हें जो भी जिम्मेदारी दी, उसे जिम्मेवारी को पूरी ईमानदारी और समर्पित भाव से निभाया भी अपने निर्वाचन क्षेत्र में तो पार्टी के संगठन को मजबूत करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी। इसके अलावा पार्टी ने इन्हें जिस जिले में पार्टी को मजबूत करने का काम सौंपा, वहां भी बेस्ट प्रदर्शन करके संगठन के जुड़े नेताओं को प्रभावित किया। पार्टी जनों में समन्वय और एकजुट का भाव बना रहे, इसके लिए हमेशा सतत प्रयास करते नजर आए। ग्रामीण क्षेत्रों में पार्टी को निचले स्तर पर मजबूत करने में चौधरी की काफी विशेष भूमिका रही, इसके अलावा केंद्र की मोदी सरकार की ओर से शुरू की गई। सभी जन कल्याणकारी योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए चौधरी ने रणनीति तैयार करके अपने निर्वाचन क्षेत्र में हर घर तक मोदी सरकार के कार्यों की जानकारी उपलब्ध करवाई। मोदी सरकार के पहले और मोदी सरकार के दूसरे शासनकाल के कार्यों के प्रचार प्रसार में चौधरी हमेशा आगे रहे और वर्तमान में भी प्रदेश के भजनलाल सरकार के उल्लेखनीय कार्यों और मोदी सरकार के जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाने के लिए सतत प्रयास करते नजर आ रहे हैं।

प्रत्येक व्यक्ति को समुचित शुद्ध पानी और किसानों को खेती के लिए पर्याप्त पानी उपलब्ध करवाना चौधरी की प्रमुख प्राथमिकता

इसमें कोई संदेह नहीं मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने पानी के क्षेत्र में पिछले 22 महीना में जो निर्णय और फैसले लिए और पानी के क्षेत्र में जिन योजनाओं पर कार्य प्रगति पर हैं, उनसे बहुत जल्दी ही पूरे प्रदेश में पानी की गंभीर समस्या से लोगों को छुटकारा मिलने जा रहा है। प्रदेश के पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण सभी हिस्सों में रहने वाले लोगों के लिए और किसानों के लिए भजनलाल सरकार ने पूरी योजना के साथ कार्य शुरू किया है। इसलिए पानी के क्षेत्र में जो कार्य भजनलाल सरकार ने किया, वह काफी उत्कृष्ट और बेमिसाल है। जन स्वास्थ्य अभियंत्रिक विभाग के मंत्री कन्हैयालाल चौधरी का साफ कहना है कि भजनलाल सरकार राजस्थान के ग्रामीण इलाकों में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को 55 लीटर शुद्ध पानी और शहर में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को 130 लीटर शुद्ध पानी उपलब्ध करवाने के लक्ष्य के साथ काम कर रही है। इसके अलावा छोटे कस्बे में प्रत्येक व्यक्ति को 100 लीटर शुद्ध पानी उपलब्ध करवाने का लक्ष्य है, इसके लिए केंद्र सरकार के सहयोग से भजनलाल सरकार पूरी रणनीति और योजना के साथ कार्य कर रही है। मंत्री चौधरी का मानना है कि प्रदेश के कृषक को जब खेती के लिए समुचित मन मिलेगा तो निश्चित रूप से उसकी फसल अच्छी होगी, फसल अच्छी होगी तो उसकी इनकम अच्छी होगी, उसकी इनकम अच्छी होगी तो राजस्थान का कृषक समृद्ध होगा जो प्रदेश के विकास को तेजी से आगे बढ़ाने में काफी मददगार साबित होगा, इसीलिए पानी को लेकर सरकार ने सबसे ज्यादा काम किया।

प्रदेश के जाट समाज के माने जाते हैं अग्रणी नेता

प्रदेश की राजनीति में जाट समाज का काफी प्रभाव है। भाजपा और कांग्रेस तथा अन्य छोटे दलों में जाट नेताओं की लंबी लिस्ट है। यह भी सच है कि कांग्रेस की तुलना में भारतीय जनता पार्टी में दबंग जाट नेताओं की कमी शुरू से ही रही है। हालांकि पिछले कुछ सालों में कांग्रेस पार्टी से कई बड़े जाट नेता भारतीय जनता पार्टी में शामिल जरूर हुए हैं लेकिन कहीं ना कहीं भाजपा में बड़े जाट नेताओं की कमी भी जरूर रही लेकिन इस कमी को काफी हद तक सतीश पूनिया, कन्हैया लाल चौधरी, झाबर सिंह खर्रा जैसे नेताओं ने पूरी भी की है, जिसमें कन्हैयालाल चौधरी प्रदेश के जाट समाज में ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय जाट समाज में भी अब अपनी एक अलग पहचान बन चुके हैं। पूर्व में जाट समाज वैवाहिक सम्मेलन के जिला अध्यक्ष भी रह चुके हैं। इस सम्मेलन के माध्यम से इन्होंने आर्थिक रूप से कमजोर जाट समाज के सैकड़ो युवक और युवतियों की शादी भी करवाई। जाट समाज के विकास के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। समाज के बच्चे पढ़ लिख कर हर क्षेत्र में अपना नाम कमाए, इसके लिए अपने स्तर पर जो भी मदद करनी होती है हमेशा मदद करते हैं। समाज का चाहे कैसा भी कार्य हो हमेशा दिल खोलकर जितना हो सके, उतना सहयोग करते हैं इसीलिए प्रदेश के जाट समाज के विभिन्न संगठनों में चौधरी की बहुत अच्छी छवि है, इन्हें एक सेवा भावी जाट राजनेता के रूप में देखा जाता है।

पिछली गहलोत सरकार में विभाग में हुई तमाम गड़बड़ियों की करवा रहे जांच

पिछली कांग्रेस पार्टी के शासनकाल में जन स्वास्थ्य अभियंत्रिक विभाग में व्यापक तौर पर गड़बड़ियों और भ्रष्टाचार के मामले उजागर हुए, उन तमाम मामलों की जांच करवाई जा रही है। अक्सर यह देखा जाता है कि प्रदेश में पार्टी की सरकार बदलने के बाद नई सरकार पिछली सरकार के कारनामों पर कुंडली मारकर बैठ जाती है। चुनाव के दौरान तो मामलों की जांच करवाने के बड़े-बड़े वादे किए जाते हैं लेकिन सरकार बनने के बाद उन मामलों पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता लेकिन जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग की जिम्मेवारी हाथ में लेने के बाद चौधरी ने इस विभाग में पिछले 5 साल में जितनी भी गड़बड़ियां हुई, उन सभी गड़बड़ियों की जांच करवा रहे हैं, चाहे टेंडर जारी करने में गड़बड़ी हो या फिर नियम विरुद्ध टेंडर जारी करने की बात हो या फिर पाइपलाइन बिछाने में गड़बड़ी की बात हो, इन तमाम गड़बड़ी और भ्रष्टाचार के मामलों को लेकर चौधरी शुरू से ही काफी गंभीर और अलर्ट मोड पर नजर आए। केंद्र से मिलने वाली राशि का सदुपयोग हो इस पर चौधरी का पूरा फोकस है एक-एक रुपए का हिसाब अधिकारियों से लिया जा रहा है। अभी हाल ही में भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की ओर से जन स्वास्थ्य अभियंत्रिक विभाग के अधिकारियों से जल जीवन मिशन में हुए घोटाले के संदर्भ में भी दस्तावेज मांगे गए हैं। विभाग ने सभी दस्तावेज एंटी करप्शन ब्यूरो को उपलब्धि करवा दिए हैं। जैसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का कहना है ना मैं खाऊंगा ना खाने दूंगा उसी तर्ज पर चौधरी अपने विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों को भी ईमानदारी से काम करने के लिए उत्साहित कर रहे हैं। मंत्री चौधरी की सक्रियता विभाग में पोस्टेड अधिकारियों और कर्मचारियों में ईमानदारी से काम करने का भाव पहले की तुलना में ज्यादा जागृत हुआ है।

विधायक एवं कैबिनेट मंत्री जोराराम कुमावत चहुंमुखी विकास की ओर अग्रसित

कार्यकाल में विधानसभा क्षेत्र में विकास पुरुष के नाम बनाई पहचान

मंत्री कुमावत के अथक प्रयासों से विधानसभा क्षेत्र सुमेरपुर में भरपूर करवाया विकास

(पुखराज कुमावत) ब्यूरोचीफ, सुमेरपुर/ पाली। राजनीति में अक्सर कहा जाता है कि जिनके पास बड़ी पूंजी या राजनीतिक विरासत हो,वहीं आगे बढ़ते हैं। एक यह भी कहावत है कि व्यक्ति पैसे से नहीं बल्कि ज्ञान और विवेक से ही आगे बढ़ता है लेकिन हम बात करते हैं राजस्थान के पाली जिले की सुमेरपुर विधानसभा से विधायक और वर्तमान में कैबिनेट मंत्री जोराराम कुमावत एक वो व्यक्ति हैं जो आम जनता के दिल में हर संभव समाया हुए हैं। उन्होंने सरल स्वभाव, मिलनसार की विशाल पेश करते हुए आम जनता से सीधा कनेक्शन है। राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में सरोकार रखने वाले कैबिनेट मंत्री जोराराम कुमावत आज भी आमजन के साथ एक-एक कार्यकर्ता को नाम से जानते हैं, और वे हमेशा हसमुख दिखाई देते हैं। हालांकि राजनीतिक क्षेत्र में ऐसे बहुत कम व्यक्ति दिखाई देते हैं। ऐसा ही एक जीवंत उदाहरण हैं। सुमेरपुर विधानसभा से दूसरी बार चुनाव जीतने के बाद राजस्थान विधानसभा तक पहुंचे और कैबिनेट मंत्री बने जोराराम कुमावत ने दैनिक जयपुर टाइम्स की खास मुलाकात में पुखराज कुमावत ब्यूरोचीफ से बातचीत के दौरान अपने व्यापारी से मंत्री बनने तक के सफर को विस्तार से साझा किया। इस दौरान उन्होंने राजनीति में सेवा, संवेदनशीलता और सिद्धांतों की भूमिका पर विशेष जोर दिया। उन्होंने एक गरीब परिवार में जन्म लेकर सामाजिक एवं राजनीतिक सरोकार रखने वाले पहले कैबिनेट मंत्री हैं जिनका किसी भी तरह का घमंड, अहम बड़प्पन नहीं है। उन्होंने अपने जीवन काल में अच्छे गुणों का इस्तेमाल किया गया जो उनको बड़ी मंजिल तक पहुंचाया।

विकास पुरुष की बनाई पहचान

जोराराम कुमावत सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं, वे हमेशा हंसमुख दिखाई देते हैं। उन्होंने अपने कार्यकाल में विधानसभा क्षेत्र में विकास पुरुष के नाम से पहचान बनाई है। उन्होंने ग्राम पंचायत सरपंच, नगर पालिका अध्यक्ष व विधायक एवं मंत्री पद पर रहते हुए हर गांव, शहर, कस्बे में विकास की मिसाल पेश की है। मंत्री कुमावत ने विधानसभा क्षेत्र में बिजली, सड़क, स्वास्थ्य, पानी, शिक्षा इत्यादि सरकारी योजनाओं के अंतर्गत सुधार करवाया है। इसके अलावा आज भी वे पूरी

तरह विकास के क्षेत्र में जनता के लिए समर्पित हैं।

कैबिनेट मंत्री कुमावत से खास बातचीत

दो बार सरपंच रहते हुए जोराराम कुमावत ने राजनीतिक क्षेत्र में शानदार पहचान बनाई। उन्होंने सरपंच से नगरपालिका अध्यक्ष का सफर तय करते हुए विकास के क्षेत्र में किसी प्रकार की कमी नहीं छोड़ी। नगरपालिका चेयरमैन बनने का नेतृत्व विस्तार~सरपंच के रूप में मिली सफलता के बाद जोराराम कुमावत ने अपने शहर सुमेरपुर में भी जनसेवा की भावना को बरकरार रखा। उन्होंने भाजपा संगठन के अंदर विभिन्न जिम्मेदारियां निभाई और पार्टी कार्यकर्ताओं के बीच भरोसेमंद चेहरा बनकर उभरे। इसी कड़ी में उन्होंने नगर पालिका के पार्षद पद का चुनाव लड़ा और जीता। पार्षद बनने के बाद जनता ने उन्हें नगर पालिका चेयरमैन की जिम्मेदारी भी सौंपी। यह एक ऐसा मोड़ था,जहां से उनकी जनसेवा शहरी स्तर पर भी प्रभाव छोड़ने लगी। अध्यक्ष रहते हुए उन्होंने शहरी योजना, स्वच्छता अभियान, जल निकासी जैसी मूलभुत सुविधाओं को दुरुस्त करने पर विशेष काम किया। कुमावत कहते हैं, 'नेतृत्व सिर्फ सत्ता नहीं,विश्वास का नाम होता है' ऐसा विश्वास जनता में बनाए रखा, और उन्हें लगातार नई जिम्मेदारियां दिलाता गया, जिसका बेखूबी से निर्वाहन किया।

विधायक बनने का सोचा भी नहीं

जब विधानसभा चुनाव में नए चेहरे की तलाश शुरू हुई, तब कई नाम सामने आए,नामों पर खूब चर्चा हुई। लेकिन जोराराम कुमावत ने कभी ऐसा सोचा भी नहीं था कि मुझे विधायक और मंत्री की जिम्मेदारी मिलेगी। जैसे-जैसे चुनाव के दिन नजदीक आए तब पार्टी ने आम जनता के लिए ऐसा चेहरा खोज निकाला। नगरपालिका अध्यक्ष रहते हुए भाजपा संगठन ने जब सुमेरपुर विधानसभा सीट से चुनाव लड़ने के लिए चेहरे की तलाश शुरू की, तो स्थानीय कार्यकर्ताओं और जनता ने एक स्वर में जोराराम कुमावत की कार्यशैली को देख नाम आगे बढ़ाया |हालांकि, वे इस पर राजी नहीं हुए.उनका मानना था कि पुराने नेता को मौका दिया जाना चाहिए। लेकिन वरिष्ठ नेताओं और कार्यकर्ताओं के लगातार आग्रह के बाद उन्होंने पांच दिन विचार किया और फिर चुनाव लड़ने को तैयार हुए। उनकी यह सहजता और विचारशीलता ही उनकी सबसे बड़ी ताकत है |चुनाव के नतीजों में भी यह साफ नजर आया। उन्होंने भारी मतों से जीत दर्ज की और विधानसभा में सुमेरपुर की मजबूत आवाज बने। आज विधायक और मंत्री पद पर रहते हुए लोगों के बीच विधानसभा क्षेत्र में विकास पुरुष के नाम से विख्यात है।

जन सेवा की निभाई जिम्मेदारी

राजस्थान सरकार में कैबिनेट मंत्री बनाए जाने के बाद मुख्यमंत्री ने उन्हें देवस्थान,पशुपालन और गौपालन विभागों की जिम्मेदारी सौंपी। जोराराम कुमावत इसे ईश्वर की विशेष कृपा मानते हैं। उनका कहना है कि 'जैसा मन होता है, वैसा ही कर्म मिलता है' उनके मन में सेवा का भाव था और उन्हें सेवा आधारित मंत्रालय भी मिले। देवस्थान विभाग के तहत उन्होंने तीर्थ यात्रियों की सुविधाओं में सुधार किया।

मंदिर परिसरों की स्वच्छता और धार्मिक स्थलों की पारदर्शिता पर बल दिया। पशुपालन और गौपालन विभागों के अंतर्गत उन्होंने ग्रामीण अर्थव्यवस्था और गौसेवा को प्राथमिकता देते हुए अनेक योजनाएं लागू कीं। उनका कहना है कि 'मूक पशुओं की सेवा और गौमाता का सम्मान हमारी संस्कृति की आत्मा है।'

गांव से जुड़ाव ने किया जनप्रतिनिधि का रास्ता तय

जोराराम कुमावत का जन्म एक साधारण एवं किसान परिवार में हुआ और इनका पालन-पोषण सुमेरपुर तहसील के सिंदरू गांव में हुआ। ग्रामीण परिवेश में पले-बढ़े कुमावत ने शिक्षा और व्यापार के साथ-साथ सामाजिक जिम्मेदारियों को कभी नजरअंदाज नहीं किया। हमेशा अग्रणी रहकर जवाबदारी से निभाया। उनका मानना है कि 'जिस जमीन से व्यक्ति आता है, उसकी जड़ों से जुड़ाव ही उसे मजबूत बनाता है' यही सोच उन्हें अन्य व्यापारियों से अलग करती है।

ब्यूरो चीफ पुखराज कुमावत से मुलाकात में वे बताते हैं कि व्यापारिक व्यस्तताओं के बावजूद वे अपने गांव और समाज से निरंतर जुड़े रहे। हर गांव की समस्याएं का साथ में जाकर निस्तारण करवाते रहे। साथ ही युवाओं की दिशा और बुजुर्गों की जरूरतें, इन सभी से वे बराबर जुड़े रहे। गांव के युवाओं को एक सामाजिक सरोकार मंच देने के उद्देश्य से उन्होंने एक नवयुवक मंडल की स्थापना की, जो सिंदरू गांव के विकास में मील का पत्थर साबित हुआ। इसके अलावा पाली जिले के विभिन्न गांवो में समाज से सीधे परिचित रहे, चाहे कैसा भी काम क्यों न हो उन्होंने अपना कार्य समझ कर निस्तारण करवाने का परिचय दिया।

कुमावत ने खेलों में भी रखी रूचि

खेलों से लगाव,और खूब रुचि रखते हुए भाग लिया है। लेकिन सेवा ही अब प्राथमिकता दी है। क्रिकेट और कबड्डी जैसे खेलों में दिलचस्पी रखने वाले जोराराम कुमावत आज अपनी व्यस्त राजनीतिक दिनचर्या के चलते खेलों से दूर हो गए हैं,लेकिन वे इस बात को लेकर कतई निराश नहीं हैं। उनका कहना है, 'जो बीत गया,उसे पीछे नहीं देखते. मेरा आज और कल जनता के लिए है' मुझे जानता

की सेवा करने का मौका मिला है,वह मेरे लिए कर्म और धर्म है। उनका मानना है कि जब जिम्मेदारी बड़ी हो,तो व्यक्तिगत रुचियों की जगह सामाजिक उत्तरदायित्व को प्राथमिकता देनी चाहिए यही वजह है कि वे अब अपने विभागों के कामों और जनता की अपेक्षाओं को ही अपने जीवन का उद्देश्य मानते हैं, और वे जनता के लिए समर्पित है। कैबिनेट मंत्री पद पर रहते हुए उनके द्वारा किए गए विकास कार्यों को लेकर कुमावत को कंधों पर बैठाते है लोग।

साधारण परिवार, सशक्त समर्थन

जोराराम कुमावत का पारिवारिक जीवन बेहद साधारण है। उनकी पत्नी एक गृहिणी हैं और तीन संतानें अपने-अपने जीवन में व्यवस्थित हैं। बेटा एक वकील है,दूसरा सरकारी सेवा में है और बेटी की शादी हो चुकी है। वे कहते हैं कि उन्हें इस बात की कोई चिंता नहीं कि उनकी राजनीतिक विरासत कौन संभालेगा। राजनीति और परिवार के बीच संतुलन पर उनका मानना है कि 'जब उद्देश्य सेवा हो,तो परिवार भी साथ चलता है,उनका स्पष्ट कहना है, 'अगर परिवार साथ न देता,तो शायद मैं यहां तक नहीं पहुंच पाता।' वे अपने परिवार को ही अपनी सबसे बड़ी शक्ति और प्रेरणा मानते हैं। उनके मन में था वह मिला गौसेवा के साथ जनता की सेवा के लिए हमेशा समर्पित है।

संघर्ष ही जीवन है

संघर्ष के रास्ते सत्ता तक जोराराम कुमावत का सफरनामा तय किया है। कुमावत की

निर्विरोध सरपंच से जनसेवा की दिशा हुई शुरू

जोराराम कुमावत ने निर्विरोध सरपंच के चुनाव जीतकर जनसेवा और राजनीतिक की शुरुआत की। साल 2000 में जब ग्राम पंचायत के चुनाव घोषित हुए,तो गांववासियों ने एक स्वर में उन्हें सरपंच बनाने का निर्णय लिया.न किसी ने नामांकन भरा,न कोई विरोध किया. जोराराम कुमावत निर्विरोध सरपंच चुने गए। यह उनकी लोकप्रियता और जनविश्वास का प्रमाण था.सरपंच बनने के बाद उन्होंने गांव के मूलभूत विकास को प्राथमिकता दी. लोगों की विभिन्न तरह की जन समस्याओं पर पूरा ध्यान दिया। जैसे कि सड़क,पानी,शिक्षा और स्वच्छता के क्षेत्र में कई तरह से पहल कीं,और गांव का चहुंमुखी विकास करवाया।

सरपंची के दौरान उनका एक विशेष कार्य उल्लेखनीय रहा- जिसमें प्रवासी ग्रामीणों को गांव की उन्नति में भागीदार बनाना.देशभर के विभिन्न हिस्सों में बसे सिंदरू के लोगों को उन्होंने गांव से जोड़ा,फंडिंग जुटाई और गांव को आदर्श ग्राम के रूप में पहचान दिलाई। यह वो समय था जब सरकारी सहायता आसानी से उपलब्ध नहीं थी, लेकिन उन्होंने आत्मनिर्भरता के मंत्र से गांव को विकसित किया। इस प्रकार गांव को विकसित किया की लोग विकास के दीवाने हो गए और विकास ही नहीं बल्कि गंगा बहाई।

राजनीतिक यात्रा सिर्फ एक पद या पहचान की कहानी नहीं, बल्कि यह एक दृष्टिकोण है- जो सेवा, संवेदनशीलता और समर्पण के मूल्यों पर आधारित है। उन्होंने हर मोड क्षेत्र में बहुत संघर्ष किया। एक व्यापारी से लेकर सरपंच, नगर पालिका अध्यक्ष, विधायक और मंत्री बनने तक का सफर उन्होंने जिस विनम्रता और कर्मनिष्ठा से तय किया है, वह उन्हें अन्य नेताओं से अलग बनाता है। उनकी सफलता का सूत्र यही है कि उन्होंने राजनीति को कभी पेशा नहीं, बल्कि सेवा का माध्यम माना है। उनकी कार्यशैली आज के युवाओं को यह संदेश देती है कि अगर नीयत साफ हो और उद्देश्य सेवा का हो, तो किसी भी मंजिल को पाया जा सकता है।

दिनेश एम.एन. जिनके नाम से ही दुबक जाते हैं गैंगस्टर और डकैत

जिन्हें देश के युवा समझते हैं अपना आईकॉन, जो बहादुरी, ईमानदारी, कर्मठता और अनुशासित जीवन शैली के माने जाते हैं पर्याय, जो हर रोज नया धमाका और नया खुलासा करके देश के चर्चित आईपीएस अफसर में हमेशा रहते हैं नंबर वन, जिनके बड़े-बड़े कारनामों और बड़ी-बड़ी उपलब्धियां की कहानी सुनकर देश के लोगों के रोंगटे हो जाते हैं खड़े

जयपुर। इसे राजस्थान के 8 करोड लोगों का सौभाग्य ही माना जाएगा कि दिनेश एम. एन. जैसे बहादुर दबंग, कर्मठ और ईमानदार आईपीएस ऑफिसर को राजस्थान कैडर मिला। भले ही यह आईपीएस अफसर कर्नाटक के रहने वाले हो लेकिन कर्नाटक में जितने लोग इन्हें नहीं जानते, उससे कहीं देश के अन्य राज्यों के लोग जानते हैं। पूरे देश के लोग इन्हें जानते ही नहीं है बल्कि इनका पूरा सम्मान और आदर करते हैं। आज आप देश के किसी भी राज्य में चले जाइए और वहां किसी युवा के सामने सिर्फ दिनेश एम. एन. बोल दीजिए यह नाम सुनते ही उस युवा की आंखें चमक जाएगी, वह उत्साहित और रोमांचक हो उठेगा। दिनेश एम. एन. नाम एक बड़ा ब्रांड बन चुका है, जो किसी बड़े फिल्म स्टार या किसी बड़े खिलाड़ी की तरह देश के लोगों के दिलों में एक अलग मुकाम बन चुका है। भले ही यह अफसर राजस्थान में अपनी सेवाएं दे रहा हो लेकिन इनकी पुलिस की नौकरी में उनके उल्लेखनीय और उत्कृष्ट कारनामों की गूंज पूरे देश में हो रही है। देश में ही नहीं बल्कि इनकी दबंग छवि और इनकी बहादुरी के चर्चे और इनकी ओर से कई बड़े-बड़े अपराधियों के खिलाफ की गई। कठोर कार्रवाई से अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड, दुबई और अन्य देशों में छुप कर बैठे भारत के प्रमुख गैंगस्टर गैंग से जुड़े कुख्यात बदमाश भी इस आईपीएस अफसर का नाम सुनते ही शांत हो जाते हैं। बड़े से बड़े बदमाश और बड़े से बड़े गैंगस्टर को जब यह पता चल जाता है कि दिनेश एम. एन. के हाथों में बदमाशों की धर पकड़ की कमान आ चुकी है तो वह अपनी गतिविधियों को तुरंत बंद कर देता है। इस तरह का बड़े से बड़े गैंगस्टर में अपने नाम से ही डर बिठा दिया है। इस पुलिस दबंग आईपीएस अफसर ने इसीलिए लोग इन्हें सिंघम भी पुकारते हैं। देश की युवा इन्हें अपना आदर्श मानते हैं, जो युवा पुलिस की नौकरी में अपना कैरियर बनाना चाहते हैं वे इसी आईपीएस अफसर की तरह अफसर बनने का ख्वाब भी सजाते हैं।

7 साल लंबे समय तक जेल में रहने के बावजूद भी नहीं टूटे और जब जेल से निकले तो और भी मजबूत इरादों के साथ बाहर आए

अगर किसी बेकसूर ईमानदार व्यक्ति को साजिश के तहत लंबे समय तक जेल में रहना पड़ जाए तो जाहिर सी बात है वह भावनात्मक रूप से जेल में इतना टूट जाता है। जेल में ही उसे ख्याल आने लगते हैं कि जब वह जेल से बाहर निकलेगा तो कैसे लोगों का सामना करेगा। यह सोच सोच कर वह जेल में ही शारीरिक और मानसिक रूप से कही टूट जाता है लेकिन 2007 में जब दिनेश एम एन को सोहराबुद्दीन एनकाउंटर मामले में जेल हुई और करीब 7 साल तक उन्हें जेल में रहना पड़ा बाद में सबूत के अभाव में उन्हें 2014 में कोर्ट से रिहा कर दिया गया लेकिन इतनी लंबे समय में जेल में रहने के बावजूद भी यह दबंग अधिकारी जब जेल से बाहर आए तो पहले से ज्यादा मजबूत और बुलंद इरादों के साथ नजर आए और जब इन्हें फिर से पुलिस में जॉइनिंग दी गई तो अपने पुराने चिर परिचित अंदाज में नजर आए। जहां-जहां जिस जिस पद पर पोस्टिंग मिली, वहां उन्होंने पहले की तरह ही बड़े-बड़े बदमाशों को सबक सिखाया। बड़े-बड़े अधिकारियों को रिश्वत के आरोप में गिरफ्तार किया। चाहे गैंगस्टर आनंदपाल सिंह का एनकाउंटर हो या फिर वरिष्ठ आईएएस अधिकारी अशोक सिंह सिंघवी को रिश्वत के आरोप में गिरफ्तार करने का मामला हो ऐसे दर्जनों बड़े-बड़े अधिकारियों को रिश्वत के आरोप में गिरफ्तार करके इस आईपीएस अधिकारी ने पूरे हिंदुस्तान भर में तहलका मचा दिया था। इस अधिकारी के एंटी करप्शन ब्यूरो में बड़े पद पर रहने के दौरान राजस्थान में घूसखोर अधिकारियों में घबराहट छा गई थी। अधिकारियों को हर पल यह चिंता सताने लगी थी कि कहीं उन पर भी दिनेश एम एन का चाबुक ना चल जाए। इस अधिकारी के ओर से करवाई राजस्थान में की जा रही थी लेकिन उनकी कार्रवाई के चर्चे पूरे हिंदुस्तान में हो रहे थे। एक तरफ जहां राजस्थान में अपराध जगत से जुड़े लोग इस अधिकारी की दबंगई से घबराकर बिल में दुबक गए थे तो दूसरी तरफ भ्रष्टाचार में शामिल अधिकारियों और कर्मचारी में भी जोरदार डर बैठ गया था, जिसकी वजह से हर कोई यही कहता हुआ नजर आया कि दिनेश एम एन जेल में लोहे की तरह तप तपकर मजबूत होकर बाहर निकले हैं।

अपने नाम के साथ अपने गांव और पिता का नाम, पिता के कहने पर ही यूपीएससी का एक दिया था एग्जाम

1995 बैच के आईपीएस अधिकारी दिनेश एम एन. के नाम में उनके गांव और उनके पिता का नाम उल्लेखित है। एन का मतलब नारायण स्वामी जो उनके पिता का नाम है तथा एम का मतलब मुनागनाहली गांव है, जो कर्नाटक के चिक्काबुलापुरम जिला के तहत आता है, जो यह दिखाता है कि यह सीनियर आईपीएस ऑफिसर अपने गांव की मिट्टी और अपने पिता को कितना आदर और सम्मान करते हैं। जानकारी के अनुसार दिनेश मुनागनहल्ली नारायण स्वामी दिनेश के पिता तहसीलदार थे। इनके पिता ने सात बार कर्नाटक सिविल सेवा परीक्षा में अपना भाग्य आजमाया लेकिन सफलता नहीं मिली हालांकि तहसीलदार पद से रिटायर्ड जरूर हुए लेकिन अफसर बनने की जो इच्छा थी, वह इच्छा वह पूरी नहीं कर पाए लेकिन दिनेश एम.एन. के इंजीनियरिंग एंड कम्युनिकेशन में बीटेक करने के बाद इनके पिता ने इन्हें यूपीएससी का एग्जाम देने के लिए प्रेरित किया और कहा कि आप कम से कम दो बार यह एग्जाम दीजिए, अगर सिलेक्शन हो जाता है तो ठीक है अन्यथा फिर आपका जो मन करे वह कीजिए। अपने पिता के सपने को साकार करने और अपने पिता के कहे अनुसार मोगनहल्ली नारायण स्वामी दिनेश ने यूपीएससी का एग्जाम दिया और पहले ही प्रयास में उन्हें सफलता मिली। इस तरह से 1995 के आईपीएस कैडर के रूप में इनका चयन हुआ। एक साधारण से परिवार में जन्मे इस आईपीएस अफसर ने आईपीएस की नौकरी में अब तक बहुत उतार-चढ़ाव देखे लेकिन अपने मजबूत इरादों ईमानदारी और समर्पित भाव से अपने उत्कृष्ट कार्यों और दबंग छवि से जो मुकाम हासिल किया, ऐसा मुकाम राजस्थान में अब से पहले किसी अन्य आईपीएस अफसर ने हासिल नहीं किया। हालांकि इस आईपीएस अफसर के परिजनों मित्रों और दोस्तों ने अपनी आंखों से अपने निर्दोष लाडले को जेल जाते हुए देखा। लेकिन उस समय भी पूरे राजस्थान भर में इस आईपीएस अफसर के समर्थन में लोग सड़कों पर उतर गए थे। राजस्थान विधानसभा में भी तत्कालीन गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया ने कहा था कि राजस्थान सरकार इस अधिकारी को जेल से छुड़ाने के लिए जी जान लगा देगी। उस समय चारों तरफ से इस अधिकारी के समर्थन में आवाज़ आ रही थी। उस समय मुगलहल्ली नारायण स्वामी दिनेश के परिजनों को यह एहसास हो गया था कि भले ही उनका लाडला जेल जा रहा हो लेकिन राजस्थान के लोगों का जो प्यार उनके साथ जुड़ा हुआ है, उस प्यार की बदौलत उनका बेटा पूरे सम्मान के साथ और मजबूती के साथ जेल से बाहर जरूर आएगा और उनका यह सपना और उम्मीद पूरी भी हुई। जब दिनेश जेल से बाहर आए तो पुलिसिंग में क्रांतिकारी हीरो की तरह उभरकर सामने आए।

प्रोफेसर पत्नी और बेटियों ने भी बहुत कष्ट झेले

1971 में कर्नाटक के चिकबल्लापुर जिले में मगनाहली में साधारण परिवार में जन्म लेने वाले मगनाहली नारायण स्वामी दिनेश 1995 बीच के आईपीएस अधिकारी हैं। उनकी शादी 1999 में विजयलक्ष्मी जो प्रोफेसर हैं, उनके साथ हुई। जब आईपीएस दिनेश को सोहराबुद्दीन एनकाउंटर मामले में जेल हुई उस समय उनकी दो मासूम बेटियों भी थी दो मासूम बेटियों का पिता होने के नाते जेल में खुद को किस तरह से अपने आप को उन्होंने लंबे समय तक संभाले रखा, यह तो आईपीएस मगनाहली नारायण स्वामी दिनेश ही बता सकते हैं लेकिन इतना जरूर है, हर पिता जब दिन में नौकरी करके अपने घर लौटता है तो उसकी आंखों में उसके छोटे बच्चों की तस्वीर ही बसी रहती है और बच्चों को भी सूरज ढलने के साथ ही अपने पिता के आने का बेताबी से इंतजार रहता है, उन्हें लगता है कि उनके पिता उनके लिए टॉफी ट्रॉफी या कोई गिफ्ट जरूर लेकर आएंगे, इसलिए आईपीएस दिनेश और उनकी पत्नी विजयलक्ष्मी के लिए इस कठिन और विपरीत परिस्थितियों का मुकाबला आसान नहीं था लेकिन इसके बावजूद भी एक तरफ जहां विजयलक्ष्मी अपने पति को जेल से बाहर निकालने के लिए पूरा प्रयास करती रही तो दूसरी तरफ अपने घर परिवार का खर्चा मेंटेन करने के अलावा अपने दोनों बेटियों की पढ़ाई इत्यादि की व्यवस्था करना भी एक बड़ी चुनौती थी लेकिन इन सब बड़ी-बड़ी चुनौतियों का विजयलक्ष्मी ने बखूबी से सामना किया। क्योंकि उन्हें पता था कि राजस्थान की जनता का प्यार उनके पति के साथ है और राजस्थान की जनता के प्यार और आशीर्वाद से उनके पति इज्जत के साथ जेल से बाहर आएंगे और फिर से नाम कमाएंगे वैसा ही अब हो रहा है। आज आईपीएस दिनेश के कार्यों से राजस्थान के भजनलाल सरकार और केंद्र की मोदी सरकार भी खूब प्रभावित है लेकिन इतना जरूर है कि विजयलक्ष्मी और उनकी बेटियों ने जो कष्ट आईपीएस दिनेश के 7 साल तक जेल में रहने के दौरान झेले हैं उनकी पीड़ा को शब्दों में बयां करना काफी मुश्किल है।

चंबल के डकैत भी हो गए थे शांत, प्रदेश में कई जिलों के एसपी रहे आज तक इन सभी जिलों के लोग करते हैं याद

1995 बैच के आईपीएस अधिकारी मुनागनाहली नारायण स्वामी दिनेश नौकरी के शुरू के कार्यकाल में राजस्थान में वर्ष 1998 से 1999 तक दौसा जिले में एडिशनल एसपी पद पर रहे, जयपुर में भी गांधीनगर एडिशनल एसपी पद पर रहे। बाद में 2000 से 2002 तक प्रदेश के करौली जिले में एसपी पद पर रहे यहां पर एसपी पद पर रहने के दौरान इन्होंने जिले में अपराध जगत से जुड़े छोटे-बड़े सभी लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की नियमित रूप से अभियान चलाकर बड़े-बड़े गुंडो को जेल में बंद कर दिया तो दूसरी तरफ करौली जिले में चंबल के डकैत गिरोह, जिनकी वजह से जिले के बड़े-बड़े कारोबारी और व्यापार जगत से जुड़े लोग हफ्ता वसूली से काफी परेशान रहते थे। चंबल के डकैतों का यहां पर व्यापक तौर पर मूवमेंट रहता था। ऐसे में जिले की पुलिस की बागडोर हाथ में लेने के साथी मगनाहली नारायण स्वामी दिनेश ने चुन चुन कर डकैत गिरोह से जुड़े लोगों का खात्मा करना शुरू किया। पुलिस की छापामार कार्रवाई और मुठभेड़ में कई डकैतों को जेल में डाला गया। संयोजित तरीके से प्लानिंग करके डकैतों के मूवमेंट वाली जगह पर जांबाज पुलिस के जवानों की टीमों का गठन करके नियमित रूप से छापामार कार्रवाई को अंजाम दिया। पूरे ऑपरेशन के दौरान खुद आगे बढ़कर टीमों का नेतृत्व करते उनकी इस दबंग वर्किंग स्टाइल को देखकर बड़े से बड़े डकैत भी शांत हो गए। उस समय करौली जिले के हर पुलिस स्टेशन में तैनात पुलिस अधिकारियों और कर्मचारी की कार्यशैली और वर्किंग पॉवर में जबरदस्त बदलाव देखने को मिला था। उस समय करौली जिला जो अपराध की घटनाओं को लेकर प्रदेश में हमेशा अव्वल रहता था लेकिन यहां वर्ष 2000 से 2002 तक जब तक मुगलहल्ली नारायण स्वामी दिनेश जिले के पुलिस कप्तान रहे तब तक जिले में अपराध नाम मात्र के रह गए थे। सभी बड़े-बड़े गुंडे और बड़े-बड़े डकैत शांत बैठ गए थे। डकैत गतिविधियां बिल्कुल खत्म हो गई थी जिससे यहां के व्यापारियों और सामाजिक संगठनों को काफी राहत मिली। जब वर्ष 2002 में मुगल हाली नारायण स्वामी दिनेश का करौली से सवाई माधोपुर जिले में एसपी पद पर ट्रांसफर किया गया तो करौली जिले के लोगों ने खूब विरोध किया। करौली के लोगों ने सड़कों पर कई दिनों तक आंदोलन किया। आईपीएस दिनेश को करौली में ही नियुक्ति देने की मांग को लेकर व्यापारिक और सामाजिक संगठनों ने गृह मंत्री और मुख्यमंत्री को भी ज्ञापन दिया लेकिन ट्रांसफर निरस्त नहीं हुआ। बाद में आज तक भी करौली जिले की जनता और व्यापारी आज भी आईपीएस दिनेश को खूब याद करते हैं, जब इन्हें सोराबुद्दीन एनकाउंटर मामले में जेल भेजा गया, उस समय भी करौली के लोगों ने कई दिनों तक सड़कों पर प्रदर्शन किया था। करौली की तरह सवाई माधोपुर में भी इस पुलिस अधिकारी ने एसपी पद पर रहते हुए उल्लेखनीय कार्य किया। इसके बाद झुंझुनू, अलवर और उदयपुर में एसपी पद पर अपनी सेवाएं दी। जिस भी जिले में रहे वहां की जनता अब तक आईपीएस दिनेश एम एन को खूब याद करती हैं अब तक लोग इन्हें मिस करते हैं। हर जिले के लोग यह चाहते हैं कि यह अधिकारी उनके जिले की रक्षा करें क्योंकि इन्होंने जहां भी सेवाएं दी, वहां पूरी ईमानदारी अनुशासित और दबंगई से अपराध जगत से जुड़े लोगों के खिलाफ कार्रवाई की, खुद की जान को जोखिम में डालकर उन्होंने कई बार बड़े-बड़े गुंडो के खिलाफ मुठभेड़ करवाई को अंजाम दिया। बेस्ट सुपरविजन और बेस्ट रणनीति के तहत इनकी ओर से अब तक जो भी ऑपरेशन किए गए। वह सब सक्सेसफुल रहे इसीलिए जब इन्हें सोहराबुद्दीन एनकाउंटर मामले में जेल भेजा गया तो जिन जिन जिलों में यह पुलिस अधीक्षक पद पर रहे, उन जिलों के लोगों ने कई दिनों तक सड़कों पर प्रदर्शन किया। भूख हड़ताल की रैलियां निकाली जुलूस निकाले, क्योंकि यह लोग यह जानते थे कि मगनाहली नारायण स्वामी दिनेश निर्दोष है उन्हें साजिश के तहत फसाया गया है।

सोहराबुद्दीन एनकाउंटर मामला

राजनीति की भेंट चढ़ा एक दबंग आईपीएस का करियर

नवंबर 2005 में कुख्यात अपराधी सोहराबुद्दीन का गुजरात और राजस्थान पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में एनकाउंटर किया गया था दोनों ही राज्यों की पुलिस के पास सबूत थे कि सोहराबुद्दीन आतंकवादी संगठन लश्करे तौबा के लिए काम करता है। इसके अलावा राजस्थान और गुजरात दोनों ही राज्यों के बड़े कारोबारी इस बात से भी काफी परेशान थे कि उन्हें डरा धमका कर सोहराबुद्दीन पैसे वसूल करता था। उसे समय मुगलहल्ली नारायण स्वामी दिनेश उदयपुर के एसपी थे। राजस्थान में भारतीय जनता पार्टी की सरकार थी। मुख्यमंत्री पद पर वसुंधरा राजे और गृहमंत्री पद पर गुलाबचंद कटारिया विराजमान थे गुजरात के गृहमंत्री अमित शाह थे तो मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी थे लेकिन केंद्र में कांग्रेस पार्टी की सरकार थी। जब नवंबर 2005 में सोहराबुद्दीन का गुजरात और राजस्थान पुलिस की संयुक्त टीमों ने एनकाउंटर किया। उस समय एनकाउंटर करने वाली पुलिस टीमों का कहना था कि सोहराबुद्दीन ने उन पर फायर किए इसलिए आत्मरक्षा में उन्होंने सोहराबुद्दीन के भागते हुए गोली मारी सोहराबुद्दीन की मौत के बाद यह मामला पूरी तरह से राजनीति में तब्दील हो गया। विपक्षी दल इस फर्जी एनकाउंटर करार देने लगे जबकि व्यापार जगत के लोगों में और उदयपुर के लोगों में इस बात की काफी प्रसन्नता थी कि एक कुख्यात अपराधी की मौत हो गई है लेकिन सोहराबुद्दीन के परिजनों ने इस फर्जी एनकाउंटर बताते हुए। कोर्ट का दरवाजा खटखटाया और सीबीआई जांच की मांग करवाई बाद में जब इसकी सीबीआई जांच हुई तो जांच में फर्जी एनकाउंटर बताया गया। जिसके बाद उदयपुर के तत्कालीन एसपी मुगलहल्ली नारायण स्वामी दिनेश और अन्य पुलिस अधिकारियों को जेल हुई मामला सीबीआई कोर्ट में पहुंचा। करीब 7 साल तक मुगलहल्ली नारायण स्वामी दिनेश के जेल में रहने के बाद 2014 में कोर्ट ने सबूत के अभाव में इस मामले में आईपीएस दिनेश को क्लीन चिट देते हुए। उन्हें रिहा कर दिया और उन्हें 2017 में फिर से राजस्थान में उन्हें आईपीएस में बड़े पदों पर नियुक्ति देने का सिलसिला शुरू किया। अगर देखा जाए तो यह मामला पूरी तरह से राजनीति से प्रेरित नजर आया क्योंकि सोहराबुद्दीन के एनकाउंटर के दौरान राजस्थान और गुजरात में भाजपा की सरकार थी। केंद्र में कांग्रेस पार्टी की भाजपा सोहराबुद्दीन केफेवर एनकाउंटर का दावा करती थी तो कांग्रेस पार्टी से फर्जी एनकाउंटर बता रही थी जिसकी वजह से सोहराबुद्दीन के परिजनों को ताकत मिली और उन्होंने इस मामले को कोर्ट में ले जाकर लंबे समय तक उलझा दिया। जिसकी वजह से कई दिनों तक निर्दोष रहते हुए भी मगनहल्ली नारायण स्वामी दिनेश को जेल में दिन काटने पड़े लोगों का कहना है कि अगर 7 साल तक यह आईपीएस अधिकारी राजस्थान में अपनी सेवाएं देता तो निश्चित रूप से राजस्थान में लोगों को काफी राहत मिलती। एक तरफ एक ईमानदार और दबंग अधिकारी की सेवा जनता को नहीं मिल पाई तो दूसरी तरफ दबंग और ईमानदार पुलिस अधिकारी की पुलिस की सर्विस का करियर भी डिस्टर्ब हुआ। लेकिन 2017 में फिर से पुलिस की नौकरी में नई पारी की शुरुआत करने के बाद मुगल्ली नारायण स्वामी दिनेश ने फिर से अपने पुराने अंदाज में तुमने जोश और उत्साह के साथ कार्य करते हुए। एक तरफ जहां बड़े–बड़े प्रशासनिक अधिकारियों को रिश्वत के आरोप में गिरफ्तार किया तो दूसरी तरफ आनंदपाल सिंह जैसे गैंगस्टर का खात्मा करके राजस्थान के ही नहीं बल्कि देश के सभी गैंगस्टर में अपने नाम का डर पैदा करके मुगलहल्ली नारायण स्वामी दिनेश ने राजस्थान पुलिस का भी पूरे देश में नाम रोशन किया है।

तत्कालीन खान सचिव अशोक सिंघवी और उनके दलाल संजय सेठ को गिरफ्तार करके हिंदुस्तान की ब्यूरोक्रेसी में मचा दी थी खलबली

2017 में वसुंधरा राज्य सरकार ने मगनाहली नारायण स्वामी दिनेश को उदयपुर में भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो में आईजी पद पर नियुक्त किया। खान विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार को उजागर करने में आईपीएस दिनेश एम एन ने करीब 2 महीने तक अपने स्तर पर बेस्ट सुपरविजन के माध्यम से गुपचुप में खान मालिकों और खान विभाग में तैनात अधिकारियों के बीच आपस में मिली भगत का जो गेम चल रहा था, उस पर बारीकी से नजर रखना शुरू किया। इसके लिए फोन टैपिंग और अन्य तकनीकी संचार माध्यमों के आधार पर कई तरह के सबूत इकट्ठे किए इनमें पाया गया कि पहले खान विभाग के अधिकारी खान का निरीक्षण करने जाते हैं फिर उन्हें मौके पर कमी बात कर नोटिस भिजवा देते हैं नोटिस के बाद समझौता का खेल शुरू होता है जिसमें पैसों का लेनदेन किया जाता है। इन सब गतिविधियों का संकलन करने के लिए आईपीएस दिनेश ने ठोस तकनीकी का इस्तेमाल किया 2 महीने तक गहरा होमवर्क करने के बाद भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के तत्कालीन पुलिस महानिदेशक परम नवदीप को विस्तार से इस पूरे प्रकरण के बारे में बताया जिसमें तत्कालीन खान अशोक सिंघवी के भ्रष्टाचार में लिप्त होने के सबूत भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के पुलिस महानिदेशक परम नवदीप ने तत्कालीन मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे को बताए गए इसके बाद अशोक सिंघवी और उनके दलाल संजय सेठ को मोगनाहली नारायण स्वामी दिनेश के अगुवाई में गई। टीम ने गिरफ्तार किया सिंघवी के आवास से करीब ढाई करोड रुपए बरामद किए गए एंटी करप्शन ब्यूरो की इस कार्रवाई से राजस्थान में ही नहीं बल्कि पूरे हिंदुस्तान की ब्यूरोक्रेसी में हलचल मच गई। यह राजस्थान के इतिहास में अब तक की सबसे बड़ी एंटी करप्शन ब्यूरो की कार्यवाही थी जब किसी भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी को रिश्वत की इतनी बड़ी रकम के साथ गिरफ्तार किया गया। आईपीएस दिनेश में दिनेश एम एन कि यह कार्रवाई इसलिए भी सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण मानी जाती है कि इस कार्रवाई में रिश्वत देने वाले और रिश्वत लेने वाले दोनों को ही भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो ने गिरफ्तार किया। खान विभाग में खान विभाग के अधिकारियों और खान मालिकों के बीच आपस में सेटिंग का जो भ्रष्टाचार का खेल चल रहा था। इसका भंडाफोड़ करके आईपीएस दिनेश ने सबको आश्चर्य चकित कर दिया इस कार्रवाई के बाद तो कर्नाटक की मिट्टी में जन्म लेने वाला यह आईपीएस अधिकारी पूरे हिंदुस्तान का चर्चित अधिकारी बन गया। राजस्थान के प्रशासनिक हलके में तैनात हर वह अधिकारी और कर्मचारी जो भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहा था। वह अब आईपीएस मगनाहली नारायण स्वामी दिनेश के नाम सुनते ही घबराने लगा था।

गैंगस्टर आनंदपाल का एनकांउटर करने में भी रही बड़ी भूमिका, आनंदपाल गैंग का मिटा दिया नामोनिशन

राजस्थान के प्रमुख गैंगस्टर आनंदपाल राजस्थान पुलिस के लिए बड़ी चुनौती बना हुआ था। आनंदपाल जिस तरह से राजस्थान पुलिस की कस्टडी से फरार हुआ। उस से राजस्थान पुलिस की छवि भी काफी धूमिल हुई थी इसलिए आनंदपाल का पता लगाकर उसको पकड़ने की जिम्मेदारी आईपीएस मगनाहली नारायण स्वामी दिनेश को दी गई, जिसमें अपने बेस्ट सुपरविजन, ठोस तकनीकी संसाधनों और सूचनाओं के आदान-प्रदान के माध्यम से आखिरकार आईपीएस दिनेश एम एन ने आनंदपाल की लोकेशन का पता लगा लिया और फिर जांबाज पुलिस टीम का गठन करके करके मालासर में जिस जगह पर आनंदपाल छुपा हुआ था। वहां पुलिस की टीम पहुंची और अंततः मुठभेड़ में आनंदपाल को मार गिराया दिया गया। इसके बाद आनंदपाल गैंग के कई सदस्यों को पुलिस ने पकड़ा भी अब आनंदपाल की मौत के बाद आनंदपाल गैंग का नामोनिशान मिट गया है। यह अपने आप में राजस्थान पुलिस की एक बड़ी सफलता मानी जाती है क्योंकि आनंदपाल राजस्थान अपराध जगत का एक खूंखार अपराधी माना जाने लगा था। उसकी अपराध की कुंडली लगातार बढ़ती जा रही थी पुलिस कस्टडी में जिस तरह से पुलिस के जवानों से ही पिस्टल छीनकर उसने सुरक्षा गार्ड्स पर फायरिंग की और फिर फरार हुआ। वह घटना उस दिन राजस्थान की ही नहीं बल्कि पूरे हिंदुस्तान की अपराध की सबसे बड़ी घटना थी। इस घटना के बाद राजस्थान पुलिस ने आनंदपाल पर पूरी तरह से शिकंजा कस लिया था क्योंकि इस घटना से राजस्थान पुलिस की छवि काफी धूमिल हुई थी।

मानवीय मूल्य और मॉडर्न एजुकेशन का अद्भुत संगम है संगीता भवाल

एजुकेशन सेक्टर में अपने नवाचार, सदाचार और वर्किंग स्टाइल से बनाया अपना अलग मुकाम छात्रों और अभिभावक दोनों में है लोकप्रिय

जयपुर। आधुनिकता के दौर में अंग्रेजी को बढ़ावा देना गलत नहीं कहा जा सकता लेकिन छोटे-छोटे मासूम बच्चों को मॉडर्न बनाने और उन्हें मॉडर्न लुक देने में बच्चे कब किस समय पथभ्रष्ट हो जाएं। इसकी कोई गारंटी भी नहीं है क्योंकि सोशल मीडिया के इस दौर में शहरी इलाकों के बच्चों को ही नहीं बल्कि ग्रामीण इलाकों के बच्चों को घर और स्कूल में ऐसा माहौल दिया जाता है कि वह इंग्लिश सीखने की धुन और खुद को मॉडर्न बनाने के प्रयासों में नैतिक आचरण सदाचार जैसे जरूरी विषयों पर ध्यान ही नहीं दे पाता। जिसकी वजह से वह हाई-फाई इंग्लिश भी सीख लेता है। अच्छे अंकों से पास भी हो जाता है लेकिन नैतिक आचरण और सदाचार जैसे लक्षण से अधिकांश बच्चे दूर हो जाते हैं, जो बड़ा होने तक उन्हें सर्वगुण संपूर्ण इंसान नहीं बनने देते भले ही उसकी अच्छी नौकरी लग जाए, लेकिन नैतिक आचरण और सदाचार के अभाव से वह हाई प्रोफाइल नौकरी करने के बाद भी समाज में उसे वह मान सम्मान नहीं मिलता, जिसका वह हकदार है इसलिए चाहे सरकारी स्कूल हो या फिर निजी हर स्कूल में अगर नैतिक आचरण और सदाचार जैसे विषयों पर बच्चों का ध्यान केंद्रित नहीं किया जाता तो वह सही मायने में स्कूल है ही नहीं यह कड़वा सच है कि राजस्थान ही नहीं बल्कि देश भर में बहुत ही कम ऐसी स्कूल है, जहां बच्चों को नैतिक आचरण सदाचार जैसे विषयों पर भी गंभीरता से नॉलेज दिया जाता है अन्यथा अधिकांश स्कूल बच्चों को सिर्फ निर्धारित पाठ्यक्रम पढ़ना, अंग्रेजी सिखाने और उन्हें मॉडर्न लुक देने तक ही अपनी जिम्मेवारी को सीमित रखते हैं। इसमें पैरेंट्स भी उतने ही दोषी हैं, जितना स्कूल प्रशासन क्योंकि पेरेंट्स जब स्कूल में बच्चों का दाखिला करवाते हैं तो उनके दिलों दिमाग में यही छाया रहता है कि उनका बच्चा हाई-फाई अंग्रेजी बोले अच्छे मार्क्स हासिल करें लेकिन कोई भी पेरेंट्स स्कूल प्रशासन से यह नहीं कहता कि उनके बच्चों को सदाचार और नैतिक आचरण जैसे लक्षण भी सिखाएं जाए। जब पेरेंट्स ही इस विषय में जागरूक नहीं हो तो फिर स्कूल प्रशासन को अकेले दोषी बताना ठीक नहीं। इन सबके बीच अब भी एजुकेशन के क्षेत्र में कुछ हस्तियां ऐसी हैं, जो मॉडर्न एजुकेशन और नैतिक आचरण सदाचार जैसे विषयों को समान महत्व देते हुए बच्चों के सर्वांगीण विकास को ज्यादा प्राथमिकता देते हैं। इनके लिए अंग्रेजी सीखना जितना जरूरी है तो उतना ही जरूरी बच्चों का नैतिक विकास करना और उन्हें सदाचारी इंसान बनाना इस कार्य में जयपुर में सी स्कीम इलाके में मीरा मार्ग स्थित गॉडशिप एकेडमी एक जीवंत उदाहरण है, जहां से निकला हुआ हर बच्चा जितना मॉडर्न और हाई-फाई अंग्रेजी से परिपूर्ण होता है। उतना ही वह नैतिक आचरण और सदाचार जैसे बड़े लक्षणों से परिपूर्ण होता है। इस संस्थान से पढ़ कर निकले बच्चे के हाव-भाव खानपान रहन-सहन स्वभाव वर्किंग स्टाइल सब कुछ प्रभावित और दिल को छूने वाला होता है। इसीलिए इस संस्थान में बच्चों को दाखिला दिलवाने के लिए पेरेंट्स हमेशा उत्साहित भी नजर आते हैं, वैसे तो जयपुर में बड़े-बड़े ग्रुप के बड़े-बड़े स्कूल संचालित हैं लेकिन इन बड़े ग्रुप के स्कूलों के बीच गॉडशिप एकेडमी ने अपनी जो अलग पहचान बनाई है, उसकी सबसे बड़ी वजह यही है कि इस स्कूल में बच्चों की पढ़ाई के अलावा यहां बच्चों के नैतिक विकास और सदाचार पर प्ले ग्रुप से ही पूरा फोकस रखा जाता है। बच्चों का तन-मन स्वस्थ और सुंदर हो बच्चों के दिल और दिमाग में हमेशा अच्छे विचार रहे। इस पर स्कूल प्रशासन की ओर से पूरा फोकस रखा जाता है, जो आजकल अक्सर किसी और स्कूल में बहुत कम देखने को मिलता है। यही वजह है कि यह स्कूल अन्य स्कूलों से भिन्न है, अन्य स्कूलों से स्पेशल है और जयपुर के लोकप्रिय स्कूलों में यह स्कूल अग्रिम पंक्ति में नजर आता है। यह स्कूल निजी स्कूलों में ही नहीं बल्कि अभिभावकों में भी काफी लोकप्रिय है, क्योंकि यहां प्रत्येक अभिभावक को स्कूल के परिवार की तरह माना जाता है। इस स्कूल को शिक्षा के क्षेत्र में अलग पहचान दिलाने में स्कूल की संस्थापक और प्रबंधक संगीता भवाल का बड़ा योगदान रहा। जिनके नवाचार अच्छा व्यवहार नए प्रयोग और इनकी वर्किंग स्टाइल से कुछ ही सालों में इस स्कूल ने शिक्षा के क्षेत्र में बड़े और नए आयाम स्थापित किए।

जो काम आईएएस बनकर भी नहीं कर पाती वह काम अब स्कूल संचालक बनाकर कर रही हैं संगीता भवाल

कहते हैं ना कि ईश्वर जो भी करता है अच्छे के लिए करता है और जो भी होगा वह अच्छे के लिए ही होगा यह कहावत संगीता भवाल की जिंदगी पर चरितार्थ हो रही है क्योंकि इन्होंने यूनिवर्सिटी की पढ़ाई कंप्लीट करने के बाद भारतीय प्रशासनिक सेवा की परीक्षा दी थी आईएएस बनने का इनका सपना था लेकिन कुछ मार्क्स कम होने और जनरल कास्ट से जुड़े होने की वजह से आईएएस में सिलेक्शन होते होते रह गया लेकिन आज एजुकेशन के सेक्टर में इन्होंने बहुत ही कम समय में खुद की जो अलग पहचान बनाई है और पीछे झांक कर अपनी लाइफ को देखते हैं तो इन्हें इस बात का बिल्कुल भी गिला नहीं है कि उनका जो आईएएस बनने का सपना था वह पूरा नहीं हो पाया क्योंकि पिछले एक दशक में शिक्षा के क्षेत्र में इन्होंने नवाचार और नए प्रयोग किया उनसे छात्रों और अभिभावकों जो आत्म संतुष्टि और प्रसन्नता मिल रही है उसे देखकर भुवाल खुद अपने करियर और अपने प्रोफेशन से संतुष्ट हैं उन्हें ऐसा लगता है कि जो नेक और पुण्य कार्य शिक्षा के क्षेत्र में रहकर समाज और राष्ट्र के लिए कर रही हैं और बच्चों को एक सर्वगुण संपन्न इंसान बना रही है शायद यह कार्य आईएएस बनकर नहीं कर पाती भवाल को ऐसा लगता है कि जो मान सम्मान और जो पापुलैरिटी उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में मिली है और जो पुरस्कार उन्हें अब तक अच्छे कार्यों के लिए मिले हैं उनके सामने बड़ी सी बड़ी हाई प्रोफाइल नौकरी कभी कोई अस्तित्व नहीं है इसलिए भवाल के हौसले बुलंद हैं और वह नई सोच नई ऊर्जा और नई उमंग के साथ हर रोज शिक्षा के क्षेत्र में कुछ नया करने की तमन्ना रखती हैं और अपने स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों को एक बेहतर इंसान बनने के लिए हर पल प्रयासरत रहती है।

पिता की विरासत को बखूबी से संभाला बचपन में माता-पिता से मिले संस्कारों ने भवाल के व्यक्तित्व में लगाए चार चांद

जयपुर से पहले कोटा में गॉडशिप एकेडमी की स्थापना हुई इस अकादमी को कोटा में संगीता भवाल के पिता ने स्थापित की थी जो खुद एजुकेशन एडमिनिस्ट्रेशन में बड़े पद से सेवानिवृत हुए थे। एजुकेशन एडमिनिस्ट्रेशन के क्षेत्र में रहते हुए इनका शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े लोगों से रोजाना मुलाकात होना आम बात थी। इसलिए नौकरी के दौरान ही एजुकेशन क्षेत्र की छोटी बड़ी सभी गतिविधियों और जानकारी का अच्छा आभास हो गया था। इसलिए नौकरी के दौरान ही एक श्रेष्ठ और उत्कृष्ट स्कूल खोलने की लालसा दिल में जागृत हो गई थी जिसे इन्होंने कोटा में स्कूल खोलकर पूरा भी किया। बाद में इनकी होनहार टैलेंटेड बेटी संगीता भवाल ने वर्ष 2014 में जयपुर के हाई प्रोफाइल अति विशिष्ट इलाके सी स्कीम मीरा मार्ग में गॉडशिप एकेडमी की स्थापना की, जो अब जयपुर की सबसे पॉपुलर और उत्कृष्ट स्कूल बन चुका है। संगीता भवाल की माता सरकारी स्कूल की प्रिंसिपल पर सेवानिवृत हुई। इसलिए भवाल को बचपन से ही घर पर साफ सुथरा स्वच्छ पढ़ने का माहौल मिला। राजपूत परिवार से ताल्लुक रखने के बावजूद भी घर पर नॉनवेज, शराब जैसी वस्तुओं के लिए कोई स्थान नहीं था। पूरा परिवार शाकाहारी था। घर में और जो भाई-बहन थे उन्हें भी नॉनवेज और शराब जैसी वस्तुएं बिल्कुल पसंद नहीं थी। जबकि राजपूत परिवार में यह सब उपभोग आम बात है लेकिन भवाल का परिवार इन सब चीजों से शुरू से ही डर रहा और अब भी इन चीजों की घर में कोई जगह नहीं है इसलिए बचपन में मिले इन अच्छे संस्कारों ने भवाल के व्यक्तित्व में चार चांद लगाए। आज उन्हें अच्छे संस्कारों को भवाल अपनी स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के साथ शेयर करती हैं और उन्हें एक सदाचारी सर्वगुणसंपन्न श्रेष्ठ नागरिक बनाने के लिए प्रेषित कर रही हैं।

संगीता भुवाल खुद डिसिप्लिन में रहती हैं और बच्चों स्टाफ को भी डिसिप्लिन के लिए प्रेरित करती हैं

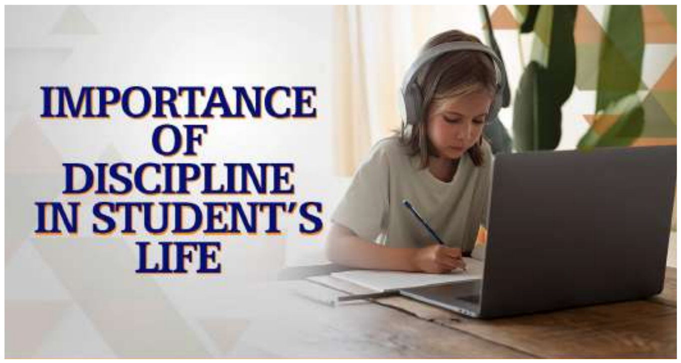

संगीता भवाल को बचपन में अपने परिवार में ही डिसिप्लिन का माहौल मिला बाद में इनकी शादी यू एस आर्मी के अधिकारी स्वराज भवाल के साथ हुई। इसलिए शादी के बाद भी अनुशासित जीवन दिनचर्या का अहम हिस्सा बना क्योंकि आर्मी से जुड़े हर शख्स की लाइफस्टाइल में अनुशासन का बड़ा समावेश होता है और जयपुर में स्कूल खोलने के बाद उनके लिए बच्चों को अनुशासित जीवन शैली के लिए प्रेरित करना प्रमुख प्राथमिकता बन गई। इसके लिए भवाल खुद स्कूल के निर्धारित समय से पहले स्कूल पहुंचती हैं और स्कूल की अवधि समाप्त होने के बाद स्कूल छोड़ती हैं। स्कूल में चाहे बच्चे हो या टीचर्स या फिर अन्य स्टाफ अनुशासित तरीके से नजर आते हैं। क्योंकि जब उन्हें अपने सामने अनुशासन की पाठशाला माने जाने वाली संगीता भवाल नजर आती है तो उनके अटैचमेंट और व्यवहार से स्कूल के स्टाफ और बच्चों का अनुशासन होना आम बन ही जाता है।

शिक्षा के क्षेत्र में संगीता भुवाल क्यों हो गई इतनी पॉपुलर

फैमिली को बैलेंस कर चलने वाली संगीता भवाल में ऐसा क्या है जिसकी वजह से शिक्षा के क्षेत्र में उनके नाम की तूती बोलती है। यह जानना भी जरूरी है इसलिए जयपुर टाइम्स ने जब उनकी प्रोफाइल को चेक किया तो पता चला कि उच्च शिक्षा ग्रहण की हुई। संगीता भवाल अनेक विषय में डिप्लोमा धारी भी है। अंग्रेजी पॉलिटिकल साइंस और इतिहास तीन सब्जेक्ट में स्नाकोत्तर डिग्री धारी हैं तथा प्राकृतिक विज्ञान और योग में डिप्लोमा भी हासिल किया हुआ है। इसके अलावा नेतृत्व क्षमता, विद्यार्थियों के समग्र शिक्षा कार्यक्रम फ्यूचर प्लानिंग पर्यावरण संरक्षण जल संरक्षण वन्य जीव संरक्षण तकनीकी शिक्षा सहित अनेक महत्वपूर्ण विषयों में शोध और अनुसंधान के माध्यम से खुद के व्यक्तित्व को निखारा है। यह ढेर सारा अनुभव और ज्ञान उन्होंने मेहनत और लगन से हासिल किया। आज इस अनुभव और ज्ञान को छात्रों और अभिभावकों के साथ तो शेयर कर ही रही हैं। इसके अलावा समय मिलने पर विभिन्न सामाजिक संगठनों की ओर से आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों में भी अपने अनुभव और नॉलेज को शेयर करके बच्चों को युवाओं को एक आदर्श और सर्वगुण संपन्न इंसान बनने के लिए प्रेरित कर रही है। पढ़ाई तो आजकल हर स्कूल में होती है। हर स्कूल में श्रेष्ठ और अच्छे टीचर और लेक्चरर्स भी मिल जाते हैं लेकिन ऐसा बहुत ही कम स्कूल में हैं। जहां छोटे-छोटे मासूम बच्चों के नैतिक विकास पर ज्यादा ध्यान दिया जाता हो, संगीता भवाल की सबसे बड़ी खासियत यही है कि वे बच्चों को आधुनिक शिक्षा से जोड़ने के साथ-साथ बच्चों के नैतिक विकास पर भी पूरा फोकस रखती हैं। बच्चों की बॉडी लैंग्वेज खान पान रहन-सहन बातचीत करने का तरीका बड़ों से कैसे बात करें, कैसे बड़ों का अभिवादन करें और छोटों को कैसे प्यार करें दोस्तों के साथ कैसे पल बिताए। साफ-सफाई वृक्षारोपण जीव-जंतुओं से प्यार कैसे शरीर को फिट रखें, कब योगा करें, कैसे योगा करें, नाश्ते में क्या खाएं, लंच में क्या लें, डिनर में क्या लें, कब खेले और कब पढ़ें रात्रि में कितने बजे सोए और कितने बजे उठे। परीक्षा के दिनों में खुद को कैसे तरोताजा और मेंटेन रखें डिप्रेशन से कैसे बचें इत्यादि विषय भले ही छोटे-छोटे लगते हैं और इनका पाठ्यक्रम से कोई लेना देना नहीं हो। लेकिन यह छोटे-छोटे विषय बच्चों को सर्वगुण इंसान बनाने में काफी सहायक साबित होते हैं इसलिए इन सब विषयों पर संगीता भवाल का उतना ही फोकस रहता है। जितना उनका पढ़ाई पर होता है इसलिए इनके स्कूल से पढ़ाई कंप्लीट करके बाहर जाने वाले छात्रों की व्यक्तित्व देखते ही बनती है क्योंकि वे जितने पढ़ाई में इंटेलिजेंट होते हैं उतने ही वे आम जीवन के साथ जुड़े तमाम विषय में भी पारंगत होते हैं इसलिए उन्हें समाज में एक अलग पहचान मिलती है। यही संगीता भवाल की एक विशेष क्वालिटी और नवाचार है जिनसे उन्हें काफी प्रसिद्धि मिली हुई है।

सर्वगुण संपन्न इंसान बनाने की फैक्ट्री की तरह नजर आ रहा है गॉडशिप एकेडमी

जयपुर में सी स्कीम मीरा मार्ग स्थित गॉडशिप एकेडमी प्ले ग्रुप से आठवीं क्लास तक संचालित है। वर्ष 2014 में 7 बच्चे और पांच अध्यापकों से शुरू किया गया। यह स्कूल अब करीब 350 बच्चों और 30 टीचर्स लेक्चररशिप वाला स्कूल बन गया है। स्कूल की विकास यात्रा काफी चौंकाने वाली और दिलचस्प है। आठवीं क्लास के बाद पढ़ाई पूरी करके इस स्कूल से जाने वाले छात्र की व्यक्तित्व ही उसकी पहचान बन जाती है। यहां से निकलने वाला छात्र शारीरिक मानसिक और तकनीकी रूप से इतना मजबूत होता है कि चाहे उसके सामने कितनी ही बड़ी चुनौती और समस्या क्यों ना आ जाए। वह पीछे मुड़कर नहीं देखा बल्कि स्कूल से मिले अच्छे संस्कार और अनुभव के माध्यम से निरंतर अपने करियर को आगे बढ़ता हुआ नजर आया। इस स्कूल से निकले कई छात्र विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बन चुके हैं। स्कूल में सभी तरह की खेल सुविधाओं के अलावा अच्छा पुस्तकालय, व्यायाम, योग, कला, डांसिंग, गायन, वाद्य यंत्रों का प्रशिक्षण दिए जाने के साथ बच्चों को शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत करने के लिए कई तरह की विधाओं और प्रयोग के माध्यम से ट्रेंड किया जाता है। उन्हें ब्राइट करियर बनाने समाज और राष्ट्र हित के प्रति समर्पित भाव से काम करने के लिए प्रेरित करने संबंधी लेक्चरर्स भी दिए जाते हैं। कुल मिलाकर यह कह सकते हैं कि यह स्कूल बच्चों को एक श्रेष्ठ नागरिक और सर्वगुण संपन्न इंसान बनाने की दिशा में फैक्ट्री की तरह कार्य कर रहा है, ऐसा किसी और स्कूल में देखने को नहीं मिलता।

अभिभावकों से घर के सदस्य की तरह बर्ताव स्कूल फीस को लेकर कभी भी नहीं होते मतभेद

प्रदेश के निजी स्कूलों में स्कूल प्रशासन और अभिभावकों के बीच फीस को लेकर टकराव और मतभेद होना आम है। इस तरह के हालात करीब करीब सभी निजी स्कूलों में साल भर देखने को मिलते हैं लेकिन बात करें गॉडशिप एकेडमी की तो कहा जाता है कि स्कूल की स्थापना से लेकर अब तक एक मौका भी ऐसा नहीं आया जब फीस को लेकर स्कूल प्रशासन और अभिभावक के बीच कोई मनमुटाव और विवाद हुआ हो। इसकी वजह है संगीता भवाल का अभिभावकों के प्रति अपनापन और अच्छा व्यवहार भवाल बच्चों के पेरेंट्स को अपने परिवार के मेंबर की तरह मानती हैं। पेरेंट्स की समस्याओं को समझती हैं अगर किसी परिवार में कोई तकलीफ और पीड़ा हो तो ऐसे समय में भवाल फैमिली मेंबर की तरह उस परिवार के साथ खड़ी रहती हैं और सुख-दुख में भागीदार बनी रहती हैं। यही उनका एक और बड़ा गुण है जो उन्हें पेरेंट्स में काफी पॉपुलर बनाया हुआ है। कई बार ऐसे अवसर भी आए जब भुवाल ने अपने यहां पढ़ने वाले बच्चों की फैमिली की मदद के लिए हर तरह से हाथ बढ़ाए। ऐसा अभिभावकों के प्रति व्यवहार किसी भी निजी स्कूलों में देखने को नहीं मिलता इतना ही नहीं अपने यहां स्कूल में नियुक्त टीचर्स लेक्चररर्स के अलावा सभी स्टाफ को अपने परिवार की तरह मानती हैं। इसलिए स्कूल स्टाफ के लोग भी भवाल को काफी प्यार और सम्मान देते हैं।

कई देशों के एजुकेशन सिस्टम के अनुभवों का लाभ उठा रही हैं संगीता भवाल

अपने पति के आर्मी की सर्विस में रहने के दौरान संगीता भवाल ने कई देशों में काफी समय अपने पति के साथ बिताया। इराक, ईरान, दुबई, संयुक्त अरब अमीरात इत्यादि देशों में रहने के दौरान संगीता भवाल ने इन देशों के लोगों की दिनचर्या लाइफस्टाइल वर्किंग स्टाइल इत्यादि को नजदीकी से देखा और महसूस किया। इसके साथ ही इन देशों के एजुकेशन सिस्टम को भी उन्होंने गंभीरता से देखा और समझा और जो चीज उन्हें अच्छी लगी उन्हें अपने दिल और दिमाग में बसा लिया अलग-अलग देश में रहने के दौरान एजुकेशन के सेक्टर में इंडिया से अलग जो नवाचार और नए प्रयोग वहां देखें। उन्हें जयपुर में अपनी स्कूल खोलने के बाद लागू किया। भारत की तुलना में विदेश में बच्चों की पर्सनालिटी को डेवलप करने के लिए छोटी क्लासों में ही विशेष ध्यान दिया जाता है। वैसा ही तरीका और सिस्टम संगीता भवाल ने अपने स्कूल में अपनाया हुआ है, जिसके अच्छे परिणाम भी सामने आ रहे हैं। इसके अलावा जयपुर में स्कूल खोलने से पहले संगीता भवाल ने देश के कई प्रमुख शहरों में विभिन्न स्कूलों में अपनी सेवाएं दी। कई स्कूलों में प्रिंसिपल के पद पर रहते हुए उल्लेखनीय कार्य किया, जिसमें उन्हें कई बार विभिन्न संगठनों की और से पुरस्कार भी मिले कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि संगीता भवाल ने एजुकेशन सिस्टम से जुड़ी छोटी बड़ी सभी विषयों की संपूर्ण जानकारी और अनुभव हासिल करने के बाद ही अपना स्कूल शुरू किया, ताकि उनके इस प्रोफेशन में किसी भी तरह की कोई बड़ा और रुकावट सामने ना आए क्योंकि आधा अधूरा ज्ञान हमेशा किसी भी इंसान को किसी भी क्षेत्र में बैक फुट पर ला देता है। इसलिए संगीता भवाल ने स्कूल खोलने में जल्दी बाजी नहीं की और तमाम तरह की विधाओं में पारंगत होने के बाद ही उन्होंने स्कूल शुरू किया। इसके बहुत ही बेमिसाल और अच्छे परिणाम सामने आए और कम समय में ही उन्होंने एजुकेशन के क्षेत्र में अपने नाम का झंडा गाड़ दिया।

संगीता भवाल का सक्सेसफुल सफर हर किसी के लिए प्रेरणादायक

GodshipAcademy

नारी है तो सब कुछ है... शायद तुझको विश्वास नहीं... इस दुख भरे संसार में...फिर प्यार की कलियां खिले... इतिहास को भी रच दिया...कुछ इस तरह के काम कर...जिसके कदम धरती ही न ... आसमा में भी तुझको मिले..! यह कविता कहीं ना कहीं संगीता भवाल पर पूरी तरह चरितार्थ होती है। भुवाल का पीहर और ससुराल पक्ष के सभी सदस्य हाई प्रोफाइल और सभ्य हैं। विभिन्न हाई प्रोफाइल नौकरियों में व्यस्त हैं इसलिए सबका एक जगह एक साथ होना काफी मुश्किल होता है लेकिन सब में दिल का जबरदस्त अटैचमेंट है। सोशल मीडिया के माध्यम से संपर्क में रहते हैं। भवाल के पति वर्तमान में दक्षिण अफ्रीका में सर्विस में बिजी हैं तो इनका बेटा स्वाधीन भुवाल अमेरिका में हाई प्रोफाइल स्टडी में बिजी है। भवाल के ससुर दिवंगत राजबल्लभ भवाल प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी रहे हैं भवाल के पति और बेटा विदेश में है। भगवान का दिया सब कुछ है पैसों की भी कमी नहीं है लेकिन औरों से कुछ अलग करने का जुनून और खुद की अपनी एक अलग पहचान बनाने के जुनून ने उन्हें बुलंदियों पर पहुंचा दिया। आज इन के परिजन दोस्त और रिश्तेदार भी इनकी मेहनत और लगन को देख कर खुद को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। भवाल खुद जयपुर के अंबाबाड़ी क्षेत्र में रहती हैं। पति और बेटे के दूर रहने के बावजूद भी अकेले अपने दम पर परिवार और रिश्तेदारों की सभी जिम्मेवारियों का निर्वहन करते हुए अपने लक्ष्य की ओर बुलेट ट्रेन की रफ्तार की तरह तेजी से आगे बढ़ रही है। अपने उत्कृष्ट कार्यो से अलग-अलग क्षेत्र में अनेक पुरस्कार हासिल कर चुकी हैं। एजुकेशन सेक्टर के अलावा पर्यावरण संरक्षण पौधारोपण जल संरक्षण योग डांसिंग डिजाइनिंग कई क्षेत्रों में अनेक पुरस्कार हासिल करने वाली भुवाल कि यह ब्राइट जीवन संघर्ष यात्रा हर किसी के लिए प्रेरणादायक है।

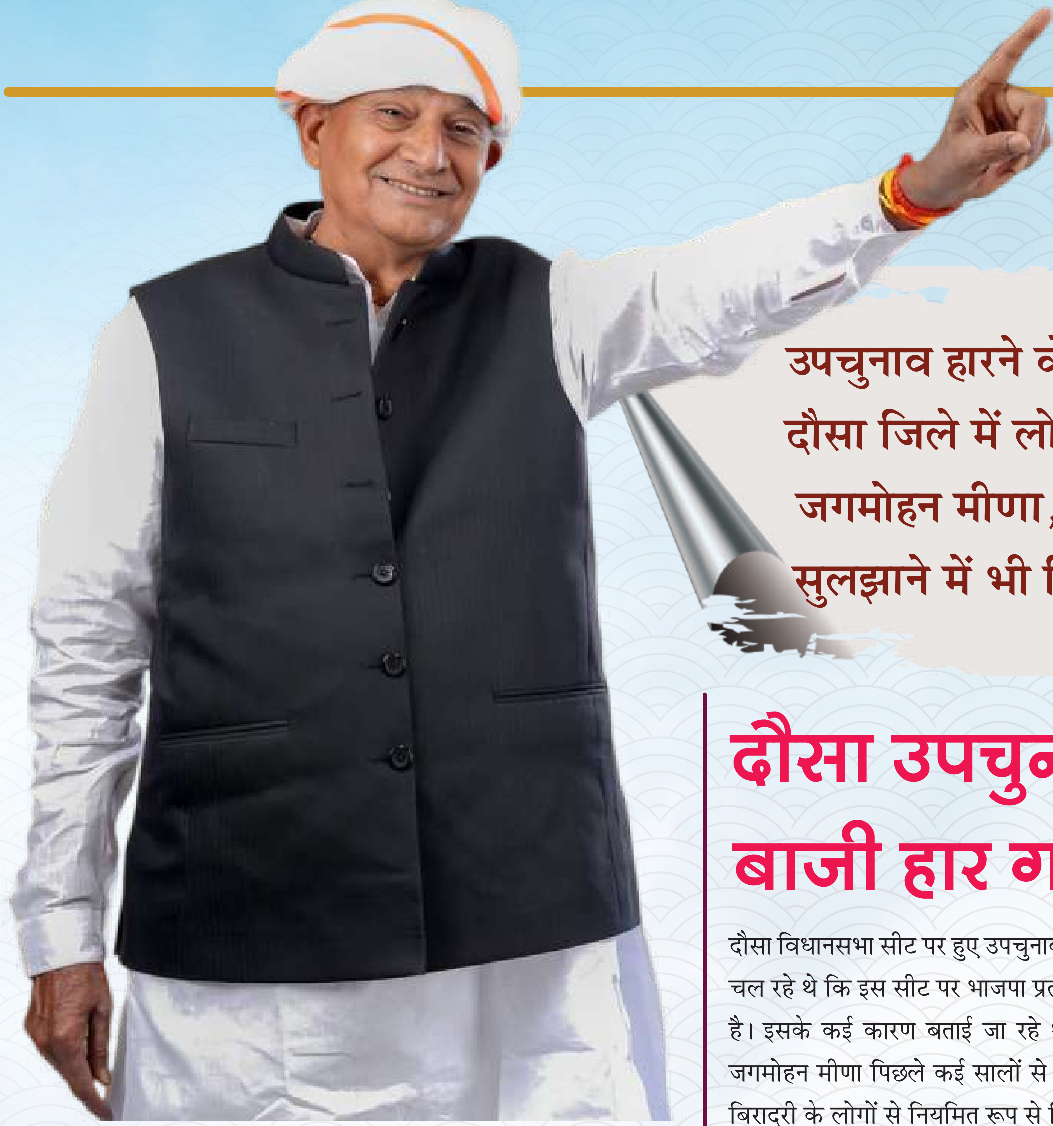

उपचुनाव हारने के बाद भी पहले की तरह दौसा जिले में लोगों के सुख दुख बांट रहे जगमोहन मीणा, क्षेत्र की समस्याओं को सुलझाने में भी निभा रहे अग्रणी भूमिका

दौसा में विधायक की तरह सक्रिय हैं जगमोहन

जयपुर। दौसा विधानसभा सीट के उपचुनाव में पराजय मिलने के बावजूद भी जगमोहन मीणा की गतिविधियां और उनकी कार्यशैली विधायक की तरह ही नजर आ रही हैं, वे नियमित रूप से लोगों से मुलाकात करते हैं, उनकी समस्याओं को सुनते हैं और फिर समस्याओं के निवारण के लिए सरकारी स्तर पर मजबूती से प्रयास भी करते हैं। इसलिए दौसा में लोगों की जुबान पर यही सुनने को मिल रहा है कि भले ही जगमोहन चुनाव हार गए हो लेकिन क्षेत्र के विकास के उन्होंने खुद को जिस तरह से समर्पित किया हुआ है ऐसा तो कोई विधायक चुने जाने के बाद भी नहीं करता। इसलिए दौसा जिले के लोगों की जुबान से अक्सर यह सुनने को मिल जाता है कि भले ही जगमोहन का स्वभाव और मिजाज उनके बड़े भाई बाबा किरोड़ी मीणा की तरह गरम नहीं हो, लेकिन लोगों के कल्याण और क्षेत्र के विकास के लिए किरोड़ी की तरह ही सक्रिय और समर्पित जरूर नजर आ रहे हैं, जो कहीं ना कहीं उनके अच्छे पॉलिटिकल भविष्य की ओर लेकर जा रहा है।

दौसा उपचुनाव में जीती हुई बाजी हार गए थे जगमोहन

दौसा विधानसभा सीट पर हुए उपचुनाव में राजनीतिक विश्लेषक भी यह मानकर चल रहे थे कि इस सीट पर भाजपा प्रत्याशी जगमोहन मीणा की जीत सुनिश्चित है। इसके कई कारण बताई जा रहे थे, उसमें सबसे बड़ा कारण यह था कि जगमोहन मीणा पिछले कई सालों से दौसा जिले में सक्रिय थे और हर जातीय बिरादरी के लोगों से नियमित रूप से मिल रहे थे। अपना अधिकांश समय दौसा जिले में ही गांव-गांव ढाणी ढाणी में घूम कर बिता रहे थे और लोगों के सुख-दुख को बांट रहे थे। जब लोकसभा चुनाव में जगमोहन मीणा को भाजपा ने टिकट नहीं दिया तो लोगों को अच्छा नहीं लगा लेकिन जब उपचुनाव में दौसा से जगमोहन को टिकट मिला तो फिर दौसा के लोगों की सहानुभूति जगमोहन मीणा को लेकर कही थी। इसके अलावा लंबे समय से जगमोहन पार्टी के संगठन में अच्छा काम कर रहे थे तथा किरोड़ी के हमेशा लंबे समय से सहयोगी रहे और बराबर उनके साथ संघर्ष किया, किरोड़ी मीणा ने भी जगमोहन मीणा के प्रचार प्रचार में पूरी ताकत झोंक दी थी। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने भी दोसा जिले में जगमोहन मीणा की जीत के लिए एक बहुत बड़ा रोड शो किया था, दौसा से किरोड़ी पूर्व में सांसद भी रह चुके हैं और दौसा जिला एक तरीके से किरोड़ी का परिवार माना जाता है, इसलिए राजनीतिक विश्लेषक यह मानकर चल रहे थे कि जगमोहन मीणा आसानी से चुनाव जीत जाएंगे लेकिन कांटे की टक्कर में जगमोहन चुनाव हार गए उसकी बड़ी वजह यही रही की उपचुनाव में भाजपा के कुछ बड़े लीडर टिकट की दावेदारी कर रहे थे, जब उन्हें टिकट नहीं मिला तो उन्होंने जगमोहन मीणा के चुनाव प्रचार से न केवल दूरियां बना ली बल्कि उन्होंने चुनाव में पार्टी के प्रति वफादारी नहीं दिखाई, इसकी वजह से जीत दर्ज करते-करते जगमोहन चुनाव हार गए।

वर्ष 2009 में राजस्थान प्रशासनिक सेवा से वीआरएस लेने के बाद खुलकर जनता की सेवा के लिए मैदान में उतरे

जगमोहन मीणा राजस्थान प्रशासनिक सेवा के पूर्व अधिकारी रह चुके हैं, हालांकि राजस्थान प्रशासनिक सेवा की नौकरी के दौरान भी राजस्थान में अलग-अलग जगह पर अलग-अलग महत्वपूर्ण विभागों में महत्वपूर्ण पदों पर रहने के दौरान मीणा अपने उत्कृष्ट कामों के लिए राजस्थान सरकार के हमेशा से काफी भरोसेमंद और काबिल अधिकारी माने जाते रहे। चाहे प्रदेश में भाजपा की सरकार रही हो या फिर कांग्रेस पार्टी की इन्हें पब्लिक की भलाई से सीधे जुड़े विभाग में ही अच्छे पदों पर रखा गया, ताकि लोगों को ठीक तरह से सुविधा मिल सके। इस काम में जगमोहन मीणा ने जहां भी नौकरी की वहां लोगों के दिलों में अपने अच्छे व्यवहार और अच्छी कार्यशैली से अलग जगह बनाई, ठीक वैसे ही अब भी उनके व्यवहार और कार्यशैली में किसी भी तरह का बदलाव नहीं आया है। पहले सरकारी नौकरी में रहते हुए जनता की सेवा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते थे और अब राजनीति में आने के बाद भी जनता की सेवा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हैं। वर्ष 2009 में वीआरएस लेने के बाद जगमोहन मीणा अपने बड़े भाई डॉक्टर किरोड़ी मीणा के साथ मिलकर जनता की सेवा के लिए सड़कों पर उतर आए और उसके बाद से लेकर अब तक वह ज्यादा से ज्यादा समय फील्ड में बिताते हैं और लोगों की समस्याओं के निवारण के लिए अपनी ओर से हंड्रेड प्रतिशत प्रयास भी करते हैं। क्योंकि वर्तमान में प्रदेश में भाजपा की सरकार है और जगमोहन मीणा भाजपा के काफी कर्मठ और सक्रिय नेता माने जाते हैं। इसलिए वे जो भी मुद्दा और विषय प्रदेश की भजनलाल सरकार के समक्ष रखते हैं, उन्हें सरकार काफी गंभीरता से भी लेती है और उनकी हर बात को सुनती भी है। इसी वजह से दौसा क्षेत्र के लोग आधी रात को भी जगमोहन मीणा के घर के दरवाजे खटखटा देते हैं और मीणा ने भी अपने घर के दरवाजे अपने बड़े भाई किरोड़ी की तरह हमेशा लोगों के लिए खुले रखे हैं।

पार्टी के संगठन के कामों में भी है माहिर, अपनी वाणी और संयम व्यवहार से हर किसी का जीत लेते हैं दिल

जगमोहन मीणा के बारे में लोगों का कहना है कि जगमोहन मीणा बिल्कुल संयम, अनुशासित और शांत स्वभाव के व्यक्ति हैं लेकिन लंबे समय तक हाई प्रोफाइल सरकारी नौकरी में रहने के दौरान हर जाति और बिरादरी के लोगों की समस्याओं को बारीकी से समझते हैं, किसान, मजदूर, एससी, एसटी, अल्पसंख्यक इत्यादि सभी वर्गों के लोगों की समस्याओं को दिल से महसूस करते हैं। सरकारी नौकरी के दौरान लंबे समय तक फील्ड में नौकरी करने का मौका मिला, जिसकी वजह से लोगों के बीच में हमेशा से रहे। इसलिए उन्हें इस बात की बखूबी से जानकारी है कि प्रदेश के किस क्षेत्र में किस तरह की समस्याएं हैं इसलिए सक्रिय राजनीति में आने के बाद उन्हें क्षेत्र के लोगों में अपना विश्वास और अपनी पकड़ बनाने के लिए कोई ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ी। क्योंकि लोग मीना की कार्यशाली और व्यवहार से अच्छी तरह से वाकिफ थे, वैसे भी सरकारी नौकरी में रहने के दौरान भी जगमोहन मीणा पर्दे के पीछे रहकर अपने बड़े भाई डॉक्टर किरोड़ी मीणा का हर तरह से सहयोग करते थे, चाहे डॉक्टर किरोड़ी मीणा के समर्थकों से मिलने की बात हो या फिर डॉक्टर किरोड़ी मीणा के जन आंदोलन की रूपरेखा तैयार करने की बात हो चाहे डॉक्टर किरोड़ी मीणा के जनता दरबार में आने वाली जनता की समस्याओं को दूर करने की बात हो हर तरह के कामों में अपने भाई किरोड़ी का बड़ा सहारा बने रहे और कंधे से कंधा मिलाकर उनका साथ देते रहे। जिसकी वजह से किरोड़ी और जगमोहन को लोग एक ही मानते हैं, अब भी दौसा जिले में भारतीय जनता पार्टी के छोटे-बड़े सभी नेताओं और कार्यकर्ताओं में जगमोहन मीणा डॉक्टर किरोड़ी मीणा की तरह ही लोकप्रिय है। क्योंकि डॉक्टर किरोड़ी मीणा वर्तमान में कैबिनेट मंत्री हैं, इससे पहले राज्यसभा में सांसद थे इसलिए किरोड़ी मीणा काफी व्यस्त रहा करते थे इसलिए किरोड़ी मीना के सारे कामों का भार जगमोहन मीणा अपने कंधों पर अब से नहीं बल्कि पिछले कई सालों से डाले हुए हैं, भाजपा के संगठन से जुड़े सभी छोटे-बड़े नेताओं के साथ मीटिंग करने की बात हो या फिर भाजपा के कार्यक्रमों और आंदोलन को गति देने की बात हो, इन सब कामों की जिम्मेवारी डॉक्टर किरोड़ी मीणा लंबे समय से जगमोहन मीणा के कंधों पर ही डाल रहे हैं इसलिए भाजपा के संगठन को गति देने में और भाजपा को मजबूती प्रदान करने में जगमोहन मीणा का दोसा जिले में बहुत बड़ा योगदान है।

बुलेट ट्रेन की रफ्तार से दौड़ रहा चाकसू का विकास

स्थानीय विधायक रामावतार बैरवा की कड़ी मेहनत लाई रंग, 19 महीना में ही कई बड़ी समस्याओं का समाधान करके चाकसू के विकास को दी नई दिशा मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से हर क्षेत्र में बड़े पैमाने पर करोड़ों रुपए के विकास कार्य स्वीकृत करवाएं और स्थानीय लोगों का जीता दिल

जयपुर। राजधानी जयपुर के समीप स्थित चाकसू आजकल विकास के मामले में मेट्रो ट्रेन रफ्तार की तरह दौड़ता हुआ दिख रहा है, पिछले 19 माह में इस विधानसभा क्षेत्र में जितने विकास कार्य हुए हैं। शायद उतने विकास कार्य आसपास के अन्य विधानसभा क्षेत्र में संपादित नहीं हुए। कई बड़ी समस्याएं जो कई सालों से यहां बनी हुई थी। उन समस्याओं का निवारण तो हुआ ही इसके अलावा शिक्षा, चिकित्सा, पानी, सड़क, बिजली, कानून, पुलिस इत्यादि सभी क्षेत्रों में व्यापक पैमाने पर विकास कार्य संपादित हुए हैं। जिसकी वजह से चाकसू का स्वरूप नए कलेवर और अंदाज में नजर आने लगा है और यह जो बदलाव हुआ है। इसका पूरा श्रेय स्थानीय विधायक रामावतार बैरवा को दिया जा सकता है। बैरवा ने जिस गंभीरता और तन्मयता से अपने निर्वाचन क्षेत्र की मांग राजस्थान विधानसभा और प्रदेश के मुख्यमंत्री के समक्ष रखी तो उनकी किसी भी मांग को मुख्यमंत्री ने इग्नोर नहीं किया और उनकी हर मांग को स्वीकार करके चाकसू के विकास को गति देने में डबल इंजन की सरकार ने भी बड़ी भूमिका अदा की। जानकार लोगों का कहना है कि स्थानीय विधायक ईमानदार और अच्छी छवि के युवा राजनेता हैं। पूर्व में चाकसू नगर पालिका में कई बार पार्षद रहे, जिसकी वजह से चाकसू शहर या नहीं बल्कि चाकसू के ग्रामीण इलाकों की समस्याओं को बहुत पहले से ही अच्छी तरह से जानते थे। इसलिए अपने चुनाव प्रचार के दौरान भी उन्होंने जहां-जहां जिन-जिन गांव के लोगों से जो जो वादे किए उन सभी वादों को प्राथमिकता के हिसाब से तेजी से पूरा कर रहे हैं और नियमित रूप से स्थानीय समस्याओं को लेकर न केवल सरकार के मंत्रियों से मुलाकात करते हैं बल्कि जब भी अवसर मिलता है। मुख्यमंत्री से भी मुलाकात करके अपने क्षेत्र की समस्याओं को तथ्यात्मक तरीके से उनके समक्ष रखते हैं। उसी का नतीजा है कि कई साल पुरानी लंबित मांगे भी इस बार पूरी हो गई है इसलिए स्थानीय लोगों का प्रदेश की भजनलाल सरकार के प्रति भरोसा और विश्वास तो मजबूत हुआ है ही। इसके अलावा लोग अभी सो रहे हैं कि बैरवा को विधायक चुनकर उन्होंने कोई गलती नहीं की है।

चाकसू में रामावतार को भाजपा का माना जाता है नया अवतार

भाजपा विधायक रामावतार बैरवा पूर्व में चाकसू नगर पालिका में पार्षद रह चुके हैं और पार्षद रहने के दौरान भी अपनी कार्यशैली और व्यवहार से भारतीय जनता पार्टी के संगठन से जुड़े नेताओं में तो लोकप्रिय थे ही। इसके अलावा विरोधी दल कांग्रेस पार्टी के पार्षद और नेता भी बैरवा का काफी सम्मान करते थे। शायद यही वजह रही कि पिछले विधानसभा चुनाव में चाकसू शहर में बैरवा को कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशी वेद प्रकाश सोलंकी की तुलना में ज्यादा वोट मिले जबकि अब से पहले जितने भी विधानसभा चुनाव हुए। उन चुनाव में कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशी ने ही चाकसू शहर में ज्यादा वोट हासिल किए थे लेकिन यह पहली बार था जब भाजपा प्रत्याशी राम अवतार बैरवा को चाकसू शहर में ही कांग्रेस प्रत्याशी की तुलना में ज्यादा वोट मिले। जिसका सीधा-सा कारण यही बताया गया कि चाकसू शहर के परंपरागत कांग्रेस पार्टी के मतदाताओं ने भी कहीं ना कहीं बैरवा को बड़ी संख्या में वोट डाला। जिसकी वजह से उन्हें ज्यादा वोट मिले इसलिए चाकसू और आसपास के इलाके में भाजपा के संगठन को गति देने और मजबूती प्रदान करने में बैरवा लंबे समय से काम कर रहे थे, उन्हें जमीन से जुड़ा नेता माना जाता है और सुबह से लेकर देर रात तक चाकसू इलाके में ही गांव गांव दौरा करते रहे हैं जब विधायक नहीं चुने गए थे, तब भी नियमित रूप से ग्रामीणों से मुलाकात करते रहे, वर्ष 2018 के विधानसभा चुनाव में पराजय का मुंह देखने के बाद भी बैरवा घर नहीं बैठे थे बल्कि भाजपा के संगठन को गति देते रहे, जिसकी वजह से उनकी पकड़ और लोकप्रियता क्षेत्र के लोगों में तेजी से बढ़ती रही। उसी का परिणाम रहा कि उन्होंने यहां सचिन पायलट के काफी करीबी नेता जो 2018 में विधायक भी चुने गए थे उन्हें हराने में सफलता मिली। इसलिए रामावतार बैरवा को चाकसू में भाजपा का एक नया अवतार भी माना जाता है क्योंकि बैरवा न केवल अनुसूचित जाति के लोगों में लोकप्रिय हैं बल्कि ब्राह्मण, महाजन, राजपूत, अल्पसंख्यक, गुर्जर, मीणा सभी समाजों में अपनी अच्छी छवि बनाए हुए हैं, जो उनकी जीत का सबसे बड़ा कारण रहा। इसके अलावा चाकसू के भारतीय जनता पार्टी के छोटे-बड़े सभी नेताओं में अपने व्यवहार से और अपनी कार्यशैली से हमेशा से लोकप्रिय रहे। इसलिए चुनाव में भी स्थानीय भारतीय जनता पार्टी के छोटे-बड़े सभी नेताओं ने बैरवा की हर संभव मदद की चाहे चुनाव मैनेजमेंट का मामला हो या फिर चुनाव प्रचार का, बैरवा का पूरा सपोर्ट किया जिसकी वजह से उन्हें जीत भी मिली।

निर्वाचन क्षेत्र में विकास कार्यो के मामले में ऐतिहासिक कार्यकाल रहा है बैरवा का

इसमें कोई संशय नहीं पिछले 19 माह में प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार के गठन के बाद और रामावतार बैरवा के विधायक चुने जाने के बाद अब तक चाकसू निर्वाचन क्षेत्र में पानी, बिजली, सड़क, शिक्षा चिकित्सा, न्यायालय इत्यादि क्षेत्रों में बड़ी संख्या में विकास कार्य संपादित हुए हैं, वर्षों पुरानी लंबित मांगे पूरी हुई है तो बड़ी संख्या में नए विकास कार्यो की सौगात भी चाकसू को मिली है जिसका पूरा श्रेय स्थानीय विधायक को दिया जा सकता है।

चाहे बीसलपुर बांध से चाकसू और आसपास के गांव को पानी उपलब्ध करवाने की बात हो या फिर चाकसू में शिक्षा के क्षेत्र में गति देने की बात हो बैरवा ने भजनलाल सरकार से कई नए कार्य स्वीकृत करवाएं, जिसमें कोटखावदा में बालिका महाविद्यालय की स्थापना, माधव राजपुरा में सरकारी कॉलेज की स्थापना, चाकसू में सैनिक बालिका विद्यालय की स्थापना करवाने में सफलता हासिल की। इसके अलावा चाकसू में अतिरिक्त जिला सेशन न्यायालय खुलवाने में सफल रहे, अगर सड़कों की बात करें तो अब तक करोड़ों रुपए के काम चाकसू निर्वाचन क्षेत्र में सड़कों के निर्माण और मरमत के लिए खर्च हो चुके हैं। कई जगहों पर सड़कों के कार्य चालू भी हैं, बैरवा की यही कोशिश है कि चाकसू शहर से छोटे बड़े सभी गांव पक्की सड़कों के माध्यम से एक दूसरे से जुड़े, देखा जाए तो सड़कों पर अब तक ज्यादा पैसा स्वीकृत करवाने में बैरवा सफल रहे हैं, पूरे चाकसू निर्वाचन क्षेत्र में सड़कों का मजबूत जाल बिछाने के प्रयासों में स्थानीय विधायक जोर शोर से जुटे हुए हैं, क्योंकि वह जानते हैं कि चाकसू का सर्वांगीण विकास क्षेत्र में अच्छी सड़क होने पर ही हो सकता है, इसलिए उनका अब तक ज्यादा फोकस सड़कों पर ही रहा है और इस काम में उन्हें सफलता भी मिली है। इसी तरह से विश्वविख्यात शीतला माता मंदिर के विकास के लिए 15 करोड रुपए स्वीकृत करवाए गए। बालाजी खेड़ा मंदिर और माधव राजपुरा में भोमिया जी के मंदिर के विकास के लिए भी पैसा मंजूर करवाया गया, चाकसू में खेल स्टेडियम का निर्माण करवाया जा रहा है। चाकसू निर्वाचन क्षेत्र में चिकित्सा के क्षेत्र में भी उप स्वास्थ्य के दो को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में तब्दील करने के प्रयास में भी बेरवा जुटे हुए हैं, इस कार्य में एक उप स्वास्थ्य केंद्र को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में सरकार की ओर से तब्दील कर दिया गया है। इसके अलावा चाकसू में उच्च स्तर का अस्पताल खुलवाने को लेकर भी बैरवा के प्रयास जारी हैं, कोटखावदा में जन स्वास्थ्य विभाग का अधिशासी अभियंता का दफ्तर खुलवाया गया है तो माधव राजपुरा में बिजली विभाग का अधिशासी अभियंता दफ्तर कार्यालय खुलवाया गया, चाकसू निर्वाचन क्षेत्र में जर्जर सरकारी स्कूलों के मरमत और निर्माण के लिए भारी बजट जारी करवाया गया है, पांच नए आंगनबाड़ी केंद्र भी खुलवाने में बैरवा ने सफलता हासिल की। इसके अलावा कुछ आंगनबाड़ी केदो को आदर्श आंगनवाड़ी केंद्र बनाने के लिए विशेष सुविधाएं उपलब्ध करवाई जा रही हैं। ऐसे अनेकों कार्य हैं जो पिछले 19 माह में स्थानीय विधायक के प्रयासों से संपादित हुए हैं, इन कामों को देखकर अंदाजा लगाया जा सकता है कि जब 19 महीना में ही इतनी बड़ी संख्या में विकास कार्य की सौगात चाकसू को मिली है तो आने वाले 3 साल में चाकसू को जब और भी विकास कार्यों की सौगात मिलेगी तो चाकसू का नया स्वरूप कैसा होगा। इसका आसानी से अंदाजा लगाया जा सकता है।

चाकसू में औद्योगिक माहौल बने इसके लिए प्रयासरत हैं बैरवा

भाजपा विधायक रामावतार बैरवा का जन्म एक साधारण से परिवार में हुआ और साधारण परिवार में जन्मे पढ़े लिखे युवा को अपना करियर बनाने में कितनी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। इस बात को बैरवा अच्छी तरह से जानते हैं बैरवा यह भी जानते हैं कि प्रदेश और देश में बेरोजगारों की संख्या में तेजी से इजाफा हो रहा है, इसलिए अकेले केंद्र और राजस्थान सरकार इतनी बड़ी संख्या में रोजगार चाह कर भी उपलब्ध नहीं करवा सकती, हालांकि प्रदेश की भजनलाल सरकार ने हर साल 100000 युवाओं को नौकरी देने की बात कही है और इस वादे के चलते पिछले 1 साल में भजनलाल सरकार ने 100000 युवाओं को सरकारी नौकरी भी दी है। फिर भी खुद मुख्यमंत्री कहते हैं की स्किल डेवलपमेंट के जरिए युवाओं को ज्यादा से ज्यादा रोजगार उपलब्ध करवा कर बेरोजगारी की समस्या को अच्छी तरह से हल किया जा सकता है। इसलिए स्थानीय विधायक रामावतार बैरवा भी इस कोशिश में जुटे हैं कि चाकसू में एक अच्छा औद्योगिक माहौल कायम हो जाए और यहां पर ज्यादा से ज्यादा औद्योगिक इकाइयों की स्थापना हो जाए तो काफी हद तक चाकसू निर्वाचन क्षेत्र के लोगों को और बेरोजगार युवाओं को रोजगार के अवसर भी मिल सकते हैं। इसलिए बेरवा अब इसी कोशिश में जुटे हैं कि भजनलाल सरकार चाकसू को औद्योगिक क्षेत्र में तब्दील करने के लिए कुछ गंभीर प्रयास करें ताकि चाकसू क्षेत्र के बेरोजगार युवाओं को रोजगार मिल सके।

प्रखर वक्ता के रूप में राजस्थान विधानसभा में नजर आए बैरवा

भजनलाल सरकार के कार्यकाल में अब तक राजस्थान विधानसभा की जो बैठकर हुई है, उन भजनलाल सरकार के कार्यकाल में अब तक राजस्थान विधानसभा की जितनी भी बैठक हुई। उन सभी बैठक में चाकसू विधायक ने हर विषय की चर्चा में हिस्सा लिया और पूरी तैयारी के साथ उन्होंने सभी मुद्दों पर अपनी बात रखी। इसके अलावा अपने निर्वाचन क्षेत्र की समस्याओं को भी तथात्मक तरीके से सदन में रखी, यही वजह रही कि भजनलाल सरकार की ओर से अब तक 2 बजट सदन में प्रस्तुत किए गए, इन दोनों बजट में चाकसू विधानसभा क्षेत्र को कई तरह की सौगात मिली। राजस्थान विधानसभा में चाहे अनुदान मांगों पर बहस को या फिर प्रश्न काल का मामला हो, बैरवा ने हर बहस में हिस्सा लिया और बहुत ही तैयारी के साथ तथ्यात्मक तरीके से अपनी बातें रखी, उनकी तैयारी, भाषण शैली और बॉडी लैंग्वेज से ऐसा लग ही नहीं कि वह पहली बार के विधायक हैं। उन्होंने किसान, युवा, महिला, पानी, बिजली, सड़क, नगरीय विकास, उद्योग जैसे विषयों पर चर्चा के दौरान शानदार तरीके से अपनी बात रखी, जिसकी वजह से सत्ता पक्ष और विपक्ष के सदस्यों में बैरवा अपने भाषण को लेकर चर्चा में भी रहे।

साफ सुथरी और ईमानदार छवि के नेताओं में गिनती होती है बैरवा की

रामावतार बैरवा साफ सुथरी छवि के ईमानदार नेता माने जाते हैं, अपने काम से मतलब रखते हैं और हर जरूरतमंद लोगों की हेल्प करने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। इसी वजह से उनके चाकसू स्थित आवास पर सुबह से लेकर देर रात तक बड़ी संख्या में लोगों के आने-जाने का सिलसिला लगा रहता है बड़ी बात यह है कि जयपुर में सरकारी निवास मिलने के बाद भी बैरवा अपना अधिकांश समय चाकसू में अपने निजी आवास पर ही बिताते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि उनके निर्वाचन क्षेत्र के लोगों को जयपुर तक पहुंचने में काफी परेशानी उठानी पड़ सकती है। इसलिए लोगों की समस्याओं को सुनने के लिए और लोगों से नियमित रूप से मुलाकात करने के लिए वे ज्यादातर समय अपने चाकसू के निजी आवास पर ही बिताते हैं। जानकारी के अनुसार अपने निजी आवास पर उन्होंने लोगों की समस्याएं सुनने के लिए बाकायदा अपना एक अलग दफ्तर भी हो लिया है, जहां पर हर समय शिकायतों का संकलन करने के लिए स्टाफ भी तैनात किया हुआ है, अगर किसी कारणवश बैरवा अपने आवास पर नहीं हो, तब भी वहां उनके कार्यालय में तैनात इस स्टाफ लोगों की समस्याओं का संकलन करते हैं और फिर दिन में जितनी भी शिकायत है मिलती हैं, उन शिकायतों को बाकायदा बैरवा खुद देखते हैं और मिली शिकायतों को न केवल संबंधित विभाग के अधिकारियों तक पहुंचाया जाता है। बल्कि शिकायतों के निवारण के लिए बैरवा अधिकारी से हाथों-हाथ फोन करके शिकायत का निस्तारण करने के लिए निर्देशित भी करते हैं, बड़ी बात यह है कि बैरवा के आचरण और उनके व्यवहार को लेकर कभी भी किसी ने शिकायत नहीं की। यहां तक की कांग्रेस पार्टी के नेता भी उनके आचरण और व्यवहार के बारे में कभी भी शिकायत करते हुए नहीं दिखे। इसका कारण यही है कि बैरवा कर्मठ और ईमानदार छवि के राजनेता हैं, जो सिर्फ जनता के कल्याण और उनके हितों की रक्षा से संबंधित कार्यों पर ही हमेशा अपना ज्यादा फोकस रखते हैं।

पार्टी के संगठन से जुड़े कार्यों को बैरवा ने हमेशा सर्वोच्च प्राथमिकता दी

रामावतार बैरवा भाजपा के शुरू से ही काफी कर्मठ और समर्पित नेता रहे हैं, वर्ष 2018 के विधानसभा चुनाव लड़ने से बहुत पहले से ही बैरवा भाजपा के संगठन को मजबूती प्रदान करने के लिए नियमित रूप से लोगों से मिलते रहते थे। चाकसू में भाजपा के संगठन से जुड़े छोटे-बड़े सभी कार्यों में बढ़कर हिस्सा लेते थे और जब भी पार्टी ने उन्हें जो भी जिम्मेदारी दी, उसे जिम्मेवारी को उन्होंने पूरी ईमानदारी से और मेहनत से निभाया। इसलिए उनकी लोकप्रियता को देखकर और चाकसू नगर पालिका में उनके पार्षद कार्यकाल को देखकर ही भारतीय जनता पार्टी का रणनीतिकारों ने वर्ष 2018 में उन्हें चाकसू से टिकट दिया था, लेकिन उस समय चाकसू के एक दो बड़े नेता ऐसे थे, जो खुद टिकट की मांग कर रहे थे लेकिन जब उन्हें टिकट नहीं मिला तो फिर उन्होंने बैरवा को हारने की पटकथा भी लिखी, जिसमें वह कामयाब भी हो गए। हालांकि 2018 में भी यह सब मानकर चल रहे थे कि बैरवा चुनाव जीत जाएंगे लेकिन कांटे की टक्कर में वेद प्रकाश सोलंकी से उन्हें हर का सामना करना पड़ा। लेकिन इसके बावजूद भी बैरवा ने हिम्मत नहीं आ रही और भाजपा के संगठन को मजबूत करने के साथ-साथ उन्होंने चाकसू निर्वाचन क्षेत्र में अपना व्यक्तिगत संपर्क जारी रखा, जिसकी वजह से क्षेत्र के लोगों पर उनकी अच्छी पकड़ हो गई और इस वजह से उन्होंने 2023 के विधानसभा चुनाव में उन्होंने अपने पुराने प्रतिद्वंद्वी वेद प्रकाश सोलंकी को हरा दिया। अब विधायक बनने के बाद भी बैरवा पार्टी के संगठन को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हैं और जब भी चाकसू में भाजपा की कोई मीटिंग होती है, उसमें अपनी उपस्थिति हर हाल में दर्ज करवाते हैं, अपनी इसी कार्य शैली और व्यवहार से वह भारतीय जनता पार्टी के संगठन से जुड़े छोटे-बड़े सभी नेताओं में काफी लोकप्रिय हैं।

क्रेंद की मोदी और प्रदेश के भजनलाल सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं के प्रचार-प्रसार में पूरी जान से जुड़े हैं बैरवा

भाजपा विधायक बैरवा की सबसे बड़ी खासियत यह है कि अपने निर्वाचन क्षेत्र में लोगों से मुलाकात के दौरान केंद्र की मोदी सरकार और प्रदेश की भजनलाल सरकार की ओर से संचालित की जा रही। योजनाओं के बारे में उन्हें बारीकी से बताते हैं और यह समझाने का प्रयास करते हैं कि उनकी यह योजनाएं उनके जीवन को कैसे और किस तरह से बेहतर बना रही है, जिसकी वजह से उन लोगों को जिन्हें सरकार की योजनाओं की जानकारी नहीं होती, वह भी योजनाओं की जानकारी हासिल करके उनका लाभ उठाने लग जाते हैं, इसलिए एक तरफ जहां बैरवा सरकार की योजनाओं का प्रचार-प्रचार करके अपने निर्वाचन क्षेत्र के लोगों में भाजपा के प्रति विश्वास को और मजबूत करने का काम करते हैं तो दूसरी तरफ उन अनजान लोगों को भी इन योजनाओं का फायदा मिल जाता है, जिन्हें इन योजनाओं की जानकारी नहीं होती, पूर्व में जब अशोक गहलोत की सरकार थी और केंद्र में भाजपा की मोदी सरकार थी। उस समय विधायक नहीं रहने के दौरान भी बैरवा ने अपने निर्वाचन क्षेत्र में केंद्र की मोदी सरकार की योजनाओं की विस्तार से जानकारी देने में लग रहे और प्रदेश की गहलोत सरकार के कामकाज और कार्य शैली पर सवालिया निशान लगाकर सरकार को हमेशा कटघरे में खड़ा करते रहे, जानकारी के अनुसार पार्टी की मीटिंगों में भी बैरवा हमेशा भारतीय जनता पार्टी के छोटे-बड़े सभी कार्यकर्ताओं से यह रिक्वेस्ट जरूर करते हैं कि जब तक सरकार की योजनाओं की जानकारी लोगों को ठीक तरह से नहीं होगी तब तक ना तो योजनाओं के क्रियान्वयन का मकसद पूरा हो पाएगा और ना भाजपा के अच्छे कामों से लोग अवगत हो पाएंगे इसलिए सबसे जरूरी यह है कि भाजपा सरकार के कामकाज के बारे में ज्यादा से ज्यादा लोगों को बताया जाए ताकि लोगों का भाजपा के प्रति विश्वास बरकरार रहे। इसलिए बेरवा हमेशा अपने भाषण में या फिर ग्रामीणों से मुलाकात के दौरान केंद्र की मोदी सरकार और प्रदेश की भजनलाल सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं के बारे में चर्चा जरूर करते हैं।

दीपों के त्योहार दीपावली की समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

चूरू का सर्वोत्कृष्ट फार्मेसी एंड पैरामेडिकल इंस्टीट्यूट

Recognized By Pharmacy Council Of India, New Delhi & Affiliated to Rihs, Jaipur

मरुधर इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी

कोर्स: D-Pharma

अवधि : 2 वर्ष

ममता पैरामेडिकल इंस्टीट्यूट

DMLT- लैब टेक्नीशियन

DRT- एक्स-रे, सी.टी. स्केन टेक्नीशियन

योग्यता: 12वीं (विज्ञान)

अवधि : 2 वर्ष

ऑफिस- भरतीया अस्पताल के सामने, चूरू कैम्पस- बिसाऊ रोड़, चूरू, सम्पर्क: 9950977909, 9460165977

मरुधर डायग्नोस्टिक एण्ड सी.टी. स्केन सेन्टर

● MRI ● CT Scan ● Sonography 4D ● Lab.

राजकीय डेडराज भरतिया अस्पताल के सामने, चूरू फोन: 01562-252572, संजीव दुकिया - 9460165977

दीपों के त्योहार दीपावली की समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

PRINCE
SCHOOL CHURU

प्रिंस स्कूल, चूरू

(An English Medium Day Boarding Residential 10+2 School)

सैनिक स्कूल की तर्ज पर संचालित

- एक ही कैंपस में स्कूल, कोचिंग, मैस की सुविधा व खेलकूद हेतु स्टेडियम की व्यवस्था
- पिछले 4 वर्षों में सैकड़ो छात्र–छात्रओं का सैनिक, मिलिट्री एवं नवोदय विद्यालय में चयन
- एक नए सिस्टम के साथ नया पैटर्न उसी सामान्य फीस में सभी कक्षाओं में एनसीआरटी के साथ कॉम्पिटिशन कक्षाओं की व्यवस्था
- सभी छात्र–छात्राओं को विद्यालय में ही हॉमवर्क एवं याद करवाना
- पढ़ाई के लिए सर्वश्रेष्ठ वातावरण एवं शानदार परीक्षा परिणाम
- सह–शैक्षिक गतिविधियों का आयोजन
- सीसीटीवी कैमरों युक्त सुरक्षित कैम्पस

AC Class Room

कक्षा 3 से 8 वीं तक सैनिक, मिलिट्री, नवोदय विद्यालय की प्रवेश परीक्षा की तैयारी के लिए अच्छी व्यवस्था

Pre Foundation For JEE, NEET, OLYMPIAD From Class IX to XII

अखिल भारतीय सैनिक/ नवोदय स्कूल प्रवेश परीक्षा 2024 में 18 में से 14 विद्यार्थियों ने क्वालीफाई किया

छात्र–छात्राओं हेतु अलग अलग छात्रावास की सुविधा

HOSTEL

Modern Education System | Expert Faculty | Spoken English

नोट– किसी भी विद्यालय में प्रवेश लेने से पहले एक बार इस विद्याल का अवलोकन जरूर करें।

मो. 9587123999, 9414334004, 9214334004

पता:– पूनियां कॉलोनी, प्रथम सर्किल के पास, गली नम्बर 14, चूरू (राजस्थान)

दीपों के त्योहार दीपावली की समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

दी चूरू सैण्ट्रल को-ऑपरेटिव बैंक लि. चूरू (राज.)

आपके अपने बैंक में अपनी जमा पूंजी पर सर्वाधिक ब्याज दरों पर अच्छा लाभ कमाएं

1 वर्ष या अधिक की एफडीआर पर 7.30 प्रतिशत ब्याज
वरिष्ठ नागरिकों के लिए 7.80 प्रतिशत ब्याज

लॉकर सुविधा उपलब्ध*
प्रतिवर्ष 700 से शुरू

पर्सनल लोन 11 %
वाहन लोन 9 %

प्रोपर्टी लोन 13.50 %
होम लोन 8.50 %

सहकार किसान कल्याण योजना लोन 11 %

स्थाई अमानतें एवं निरन्तर चालित अमानतों पर ब्याज दरें दिनांक 22.04.2024 से

अवधि	सामान्य	वरिष्ठ नागरिकों के लिए	25 लाख या अधिक की एकल मियादी जमा पर (समय पूर्व भुगतान पर सामान्य दर देय होगी)	ग्राम सेवा सहकारी समिति एवं अरबन कॉ-ऑपरेटिव बैंक के लिए
15 दिवस से 29 दिवस	3.60%	4.10%	4.10%	4.15%
30 दिवस से 89 दिवस	3.75%	4.25%	4.25%	4.30%
90 दिवस से 364 दिवस	5.00%	5.50%	5.25%	5.30%
एक वर्ष व 2 वर्ष से कम अवधि पर	7.30%	7.80%	7.55%	7.90%
दो वर्ष व उससे अधिक अवधि पर	7.15%	7.65%	7.35%	7.60%
बचत खाता अमानतों पर	3.50%	3.50%	3.50%	3.50%

लॉकर सुविधा - चूरू, रतनगढ़, सुजानगढ़, सरदारशहर एवं राजगढ़ शाखाओं में उपलब्ध

व्यावसायिक वाहन ऋण राशि 40 लाख रूपये तक

निजी वाहन ऋण राशि 20 लाख रूपये तक

बैंक अपने सभी ग्राहकों से अपील करता है कि अपने बचत एवं अन्य खातों की केवाईसी संबंधित शाखा में जाकर पूर्ण करवाना सुनिश्चित करें।

मदनलाल शर्मा : प्रबन्ध निदेशक

अभिषेक सुराणा : प्रशासक

दीपों के त्योहार दीपावली की समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
SHRI JAIN SHWETAMBER TERAPANTHI BAL VIHAR SEN. SEC. SCHOOL, CHURU
RUN BY SHRI JAIN SHWETAMBER TR. SEVA FOUNDATION, KOLKATA
BEST EDUCATION SYSTEM WITH BEST PERFORMANCE
ADMISSIONS OPEN
English Medium
Playgroup to XII
(Arts, Com.)
Dr. S.M. Surana
President
Mr. Anand Balan
Secretary
P.S. Rathore
Principal
Purani Sadak, CHURU (Raj.) Ph.- 01562-252798, Mo.- 9414350782

दीपों के त्योहार दीपावली की समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
अब टाटा कम्पनी का सोलर लगवाना हुआ सस्ता
TATA
TATA POWER SOLAR
एक बार का खर्च जिन्दगी भर की बचत
सोलर रूफ लगाएं, घर को अर्निंग मेम्बर बनाएं
TATA POWER
SOLAROOF
भारत की नं. 1*
सोलर रूफटॉप कम्पनी
सब्सिडी 78000/-
पीएम-सूर्य घर : मुफ्त बिजली योजना
के तहत 3 से 10 KW सोलर सिस्टम पर 78000/- रूपये की
सब्सिडी में आज ही अपना आवेदन करवायें।
बिजली के बिल से छुटकारा पायें
1 Year Insurance FREE
Loan Facility Available
CERTIFICATE
OF AUTHORISED CHANNEL PARTNER
THIS IS TO CERTIFY THAT
GANPATI SOLAR HOUSE
CHURU, RAJASTHAN
IS AN AUTHORISED CHANNEL PARTNER of TATA POWER SOLAR
मंगतुराम तंवर
प्रो. गणपति इन्टरप्राईजेज, चूरू
भुवनेश तंवर
प्रो. गणपति सोलर हाऊस, चूरू
घर, हॉस्पिटल, होटल, स्कूल, फैक्ट्री आदि में सोलर लगवाने के लिए सम्पर्क करें:-
गणपति सोलर हाऊस
(अथोराईज्ड चैनल पार्टनर)
पता : नई सडक़, खेमका पेट्रोल पम्प के पास, बाबोसा कॉम्पलेक्स, चूरू
मो.- 8290972105, 9001717120, 9928259135, 9024551597

दीपों के त्योहार दीपावली की समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
LAKSHMIPAT SINGHANIA ACADEMY BISSAU
Co-Educational, CBSE Affiliated
English Medium School
ज्ञानम् अमृतम्
OUR FEATURES :
Wide range of subjects available in Science, Commerce and Arts streams for Class XI, ensuring holistic learning and career readiness.
Fully furnished ATL cum Robotics Lab.
Well equipped Computer Lab.
Teaching through Interactive Smart Panels.
Various indoor and outdoor sports : Football, Volleyball, Basketball, Cricket, TT, Kho-Kho etc.
Huge lush green playground.
Highly qualified and experienced faculty.
A safe campus equipped with CCTV monitoring.
Comfortable and convenient conveyance facility.
Modern infrastructure with all the facilities and amenities.
First-Aid / Medical Facilities.
Nursery to IX & XI
Science
Arts
Commerce
Ranked No. 1
in Churu District
by Education World
Special scholarships available for only girl child and war martyrs' wards.
Balrasar Tanwaran, PO : Ranasar, Distt. : Churu 331001, E-mail : info@lsabissau.in,
Contact us : 01595264110, +91 7428682225, Visit us at : www.lsabissau.in

दीपों के त्योहार दीपावली की समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

शुभ दिपावली
HAPPY Diwali
किड्स पैराडाइज सी.सै. स्कूल, चूरू
हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम में संचालित
नर्सरी से कक्षा 12वीं तक
(कला संकाय)
Grow
Learn
Play
मो. इशहाक खान
निदेशक
वार्ड नं. 5, आथुणा मौहल्ला, मदीना मुसाफिर खाना के पास, चूरू (राज.) मो.- 9828782845

दीपों के त्योहार दीपावली की समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
3, 5, 8, 10 KW
अब आपकी छत बनेगी आपका सेविंग अकाउंट...
0% डाउन पेमेंट
पीएम सूर्य घर योजना
सबसे कम 6% ब्याज दर
के तहत 3, 5, 8, 10 KW सोलर सिस्टम पर
95,000/- रूपये की सब्सिडीमें आज ही अपना आवेदन करवायें।
बिजली के बिल से छुटकारा पायें
एक ही स्टोर में सभी ब्रांड उपलब्ध
घर, हॉस्पिटल, होटल इण्डस्ट्री के लिए रूफटॉप सोलर के लिए संपर्क करें
TATA POWER
OSWAL
adani
WAAREE
UTL SOLAR
Luminous Solar
HAVELLS
श्री देव सोलर लाईट
(अथोराईज्ड चैनल पार्टनर)
होटल सनसिटी के पीछे, लोहिया कॉलेज के पास, चूरू
प्रो.- पंकज गुर्जर
9783391088, 6375016689
9783391063, 9783391027

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

स्वदेशी अपनाएं
आत्मनिर्भर राजस्थान बनाएं

श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री

माननीय प्रधानमंत्री **श्री नरेन्द्र मोदी जी** के 75 वें जन्मदिन से प्रेरित जनसेवा अभियान

दीपों के त्योहार दीपावली की समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

सेवा शिविरों से मिली आम जनता को बड़ी राहत

1.95 लाख + पट्टे वितरण	**1.17 लाख +** फार्मर रजिस्ट्री में नए पंजीयन	**1.53 लाख+** भू-राजस्व शुद्धिकरण प्रकरणों का निस्तारण
1.24 लाख + नामान्तरण प्रकरणों का निस्तारण	**2.60 लाख +** मंगला पशु बीमा योजना पॉलिसी	**1.72 लाख +** मूल निवास प्रमाण पत्र
2.04 लाख + जाति प्रमाण पत्र वितरण	**1.25 लाख +** जन्म, मृत्यु एवं विवाह पंजीयन	**1.98 लाख+** सामाजिक सुरक्षा पेंशनर्स सत्यापन
95.8 हजार + खाद्य सुरक्षा पोर्टल पर आवेदनों की स्वीकृति	**25 हजार +** स्वनिधि योजनांतर्गत ऋण आवेदन	**1.48 लाख +** जनधन योजना में बैंक खाते खोले
1.13 लाख + जन आधार योजना में अद्यतन / संशोधन	**75.6 हजार +** वय वंदन कार्ड जारी	**17.06 लाख +** किशोरियों एवं गर्भवती महिलाओं की एनीमिया की जांच
10.77 लाख + नागरिकों की टी.बी. रोग स्क्रीनिंग	**24.36 लाख +** लोगों का स्वास्थ्य शिविर में उपचार	**1.42 लाख +** नई स्ट्रीट लाइट / सुधार

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

दीपों के त्योहार दीपावली की समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

हार्ट केयर एण्ड जनरल हॉस्पिटल

नई सड़क, वार्ड नम्बर 16, चूरू (राजस्थान)

जनरल चैकअप, रूटीन चैकअप एवं ऑल बॉडी चैकअप की सुविधाएं उपलब्ध

RGHS

मुख्यमंत्री चिरंजीवी बीमा योजना

चिरंजीवी
मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना

- राज्य कर्मचारियों एवं सेवानिवृत पेंशनर्स को नि:शुल्क सुविधा उपलब्ध
- राज्य के हर परिवार को नि:शुल्क ईलाज के लिए पांच लाख रूपए तक के स्वास्थ्य बीमा का लाभ

सम्पर्क करें
01562-250081
77424-11999
97823-06290

डॉ. दीपक सिंह
हृदय, मधुमेह एवं श्वास रोग परामर्श

आर. जी. एच. एस. कार्ड धारकों के लिए निम्न सुविधा

- ECG, 2D Echo/CTMT की जांचें
- आई.सी.यू. एवं जनरल वार्ड की सुविधाएं
- सभी प्रकार की दवाईयां - भर्ती एवं ओपीडी में

दीपों के त्योहार दीपावली की समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

श्री श्याम स्वीट्स

गुदड़ी बाजार, चूरू (राजस्थान)

अन्नूराम ख्यालीराम हलवाई

विवाह-शादी एवं पार्टी में उच्च क्वालिटी की मिठाईयों के लिए सम्पर्क करें।

स्पेशल सब्जी- मटर पनीर, शाही पनीर, मलाई कोफ्ता, केर सागरी, बेसन गट्टा लहसून चटनी, गर्म बड़ा तवा रोटी, दाल फ्राई

प्रो. गिरधारीलाल शर्मा (नानू)
98281-58267, 99298-30555
70147-28188, 80945-01542

दीपों के त्योहार दीपावली की समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

सैनी पिक्चर हाऊस

सुनिल पिक्चर आर्ट एण्ड क्राफ्ट गैलरी

विशेष गिफ्ट, टॉय, डबल फ्रेम व डेकोरेशन का सबसे बड़ा शौरूम

प्रकाशचंद सैनी	आनन्द सैनी
94131-76158	94612-20203
86199-09563	89050-35075

मैन रोड़, आलोक सिनेमा के पास, चूरू (राजस्थान)

दीपों के त्योहार दीपावली की समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

महर्षि फूड लाईन

सुराणा आईस फैक्ट्री के पास, चूरू (राजस्थान)

शादी-विवाह, पार्टी, मीटिंग एवं अन्य कार्यक्रमों में कैटरिंग, टीफिन एवं भोजन पैकेट हेतु संपर्क करें-

प्रो. परमेश्वरलाल महर्षि

समाजसेवी

Mob.- 9587575798

राजस्थान सरकार एवं केंद्र सरकार द्वारा विज्ञापन के लिए मान्यता प्राप्त

जयपुर टाइम्स

(जयपुर एवं चूरू से एक साथ प्रकाशित)

जयपुर टाइम्स

भजनलाल सरकार में वीआईपी कल्चर का त्याग करने वाले पहले मंत्री "संजय शर्मा"

जयपुर टाइम्स

राजनीति में दादी से आगे निकली दिया कुमारी

दिया कुमारी ने अब तक तीन चुनाव लड़े और तीनों जीते

जयपुर टाइम्स

किसान और पशुपालकों में ओम पूनिया की लोकप्रियता चरम पर

सामाजिक सरोकारों के कामों में भी पूनिया की रहा - महत्ता जैसी भूमिका

जयपुर टाइम्स

पहले वाजपेई का अब नरेंद्र मोदी का दिल जीता "अश्विनी वैष्णव" ने

जयपुर टाइम्स

पिता के सपनों को साकार कर रहे झाबर सिंह खर्रा, शहरों को नया लुक देने के लिए कर रहे है कड़ी मेहनत

जयपुर टाइम्स

भजनलाल शर्मा ने रचा इतिहास, डेढ़ लाख आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं संग मनाया "रक्षाबंधन"

जयपुर टाइम्स समाचार पत्र प्रतिदिन पढ़ने के लिए क्लिक करें

www.jaipurtimes.org

https://www.youtube.com/@JaipurTimes

@JaipurTimes2

@jaipurtimes.news

जयपुर टाइम्स में संवाददाता बनने के लिए, विज्ञापन एवं समाचार प्रकाशित करवाने के लिए सम्पर्क करें :-

Email- jaipurtimes2007@gmail.com (समाचारों के लिए)

Email- jaipurtimes.adv@gmail.com (विज्ञापनों के लिए)

मो. 7014217770

प्रधान कार्यालय- सी 588, 4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड, रोड़ नं. 14, सीकर रोड़, जयपुर (राजस्थान)